भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 13 | उदयपुर शुक्रवार 15 जुलाई 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

अबुझ दीयों के रहस्य

अनबुझ दीपक जितने अविश्वसनीय और चकित कर देने वाले होते हैं उतने ही अकल्पनीय तथा रहस्यमय लगते हैं। दीपक के लिए सर्वमान्य तथ्य यह है कि उनके जलने-जलाने के लिए हवा और ईंधन अर्थात तेल-घी होना जरूरी है। इसके अभाव में उनका लगातार जलते रहना और असम्भव होता है।

इस बीच यदि यह जानने-देखने और पढने-सुनने को मिले कि हमारे देश में तथा विदेशों में भी दीर्घ समय तक ऐसे जलते हुए दीपकों का अस्तित्व था और आज भी है तो अचरज होना स्वाभाविक है। ऐसे सैकड़ों वर्षों से निर्जन स्थानों में गुप्त रूप में अथवा सबकी निगाहों में दिखाई देने वाले दीपक बिना किसी ईंधन, हवा या बत्ती के सैकड़ों-हजारों वर्ष से जल रहे हैं। आइये, कुछ का उल्लेख करें-

(1) प्राचीन इतिहासकार यसे लइस ने अपनी एक पुस्तक में मुद्दतों से जलते हुए एक दीपक का वर्णन किया है। यह एस्टे नाग के एक प्राचीन नगर में एक कब्र की खुदाई के दौरान जलता हुआ पाया गया था। यह दीपक मिट्टी के आपस में जुड़े हुए दो बर्तनों में बंद था। इसे दो हौजों से जोड़ा गया था। इसमें एक सोने व एक चांदी का बना हुआ था। इन हौजों में एक अज्ञात तरल द्रव्य भरा हुआ था।

यसे लइस के अनुसार इन बर्तनों पर एक अभिलेख भी खुदा हुआ मिला जिस पर लिखा था- 'यह दीपक यूनानी देवता पलोटी का उपहार है इसलिए इसे कोई छुये नहीं। इस दीपक को शताब्दियों तक निरन्तर जलते रहने की योग्यता प्रदान की गई है।' लेखक ने इस दीपक की आयु 500 वर्ष बताई है। अनुमान है कि यह दीपक चौथी सदी में किसी समय जलाया गया था।

(2) ऐसा ही एक दीपक सन् 1550 में इटली के नसीदा द्वीप के एक खेत में खुदाई के दौरान जलता हुआ पाया गया। खेत में एक किसान काम कर रहा था। अचानक उसका फावड़ा किसी ठोस वस्तु से टकराया।

बड़े परिश्रम से उस जगह की खुदाई की गई तो एक कब्र का दरवाजा दिखाई दिया जिसमें शीशा व अन्य पदार्थ जड़े हुए थे। कब्र की छत काफी मजबूत थी। जब कब्र का दरवाजा तोड़ा गया तो भीतर का दृश्य देखकर आंखें फटी-की-फटी रह गई। कब्र के भीतर अंधकार की बजाय तीव्र प्रकाश फैला हुआ था जो कब्र में रखे एक दीपक से निकल रहा था। इसकी बत्ती साफ और नई प्रतीत हो रही थी। आश्चर्य तो यह था कि दीपक शीशे में बंद था पर जल रहा था।

(3) सुप्रसिद्ध लेखक सेंट आगस्टाइल 354 से 430 ईसवी ने अपनी एक पुस्तक में सौन्दर्य की देवी वीनस के मन्दिर में सदैव जलते रहने वाले एक दीपक का वर्णन किया है। यह दीपक खुले मैदान में रखा होता था जिस पर तेज हवा और बरसात का भी कोई असर नहीं होता था। शताब्दियों तक जलने वाले इस दीपक की प्रामाणिकता सन् 1840 में स्पैन के कुर्तबा नामक स्थान पर खुदाई के दौरान मिली। यह दीपक एक रोमन परिवार की संयुक्त रूप से बनाई गई कब्र में जलता पाया गया।

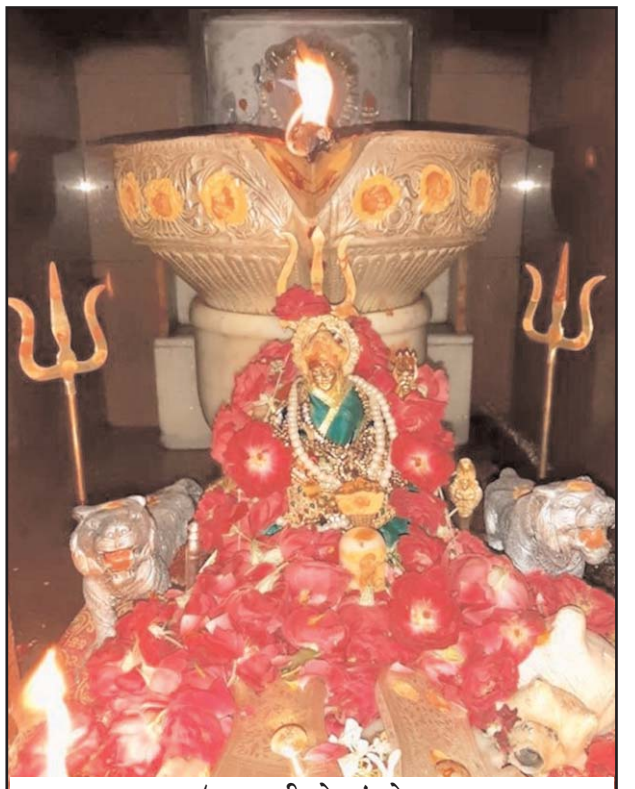

'गब्बर नी गोख' जोत

(4) ब्रिटिश इतिहासकार विलियम कैमडन की पुस्तक 'ब्रिटेन' में पुराने खण्डहरों की खुदाई में मिले जलते हुए दीपकों के उल्लेख मिलते हैं। वर्णन है कि खुदाई के दौरान एक कब्र में जलता हुआ दीपक मिला था जो सम्राट कांस्टेट्स के शव के साथ रखा गया था। प्राचीन समय के कीमियागर (रसायनशास्त्री) सोने को तरल द्रव्य में परिवर्तित करने की ऐसी विधि जानते थे जिससे वर्षों तक दीपक को जलाया जा सके। ऐसे शताब्दियों से जलते रहस्यमय दीपक वैज्ञानिकों के लिए अबूझ पहेली बने हुए हैं। लगता है प्राचीन काल में रसायनेज्ञों को ऐसी रासायनिक यौगिकियों का ज्ञान था। कैमडन का समय 1536 से 1539 का कहा जाता है।

(5) प्रसिद्ध खोजक जोडोपैंसी रोलिस का यह कथन रहा कि ऐसे अखण्ड जलते रहने वाले दीयों में जिन बत्तियों का प्रयोग होता उनमें जलने के उपरान्त भी तेल कभी समाप्त नहीं होता था। रोलिस के मत में प्राचीन रोम निवासी एसबेस्ट्स भूमि से निकाल उसे साफसूफ कर बत्तियां बनाने की विधि से परिचित थे। वे जानते थे कि एसबेस्ट्स नामक पदार्थ पर अग्नि का कोई असर नहीं हो पाता है। इतिहासविज्ञ पेलेनी तथा भूगोलशास्त्री अस्ट्राबो ने भी ऐसे तथ्यों को वर्णित किया है।

अदृश्य दीपों के रहस्यमय लौकिक-अलौकिक स्वरूप का आंखों देखा वर्णन अकथनीय ही है। राजस्थान में ऐसे दीपक किसी मन्दिर, देवस्थान या फिर सिद्ध स्थल या फिर खण्डहरों, जमीन के नीचे गुफावस्था में मिलते हैं। विदेशों में प्राचीन खण्डहरों, कब्रों, मकबरों, टापुओं तथा मन्दिरों में भी ऐसे दीपक हैं।

राजस्थान की सीमा से लगे गुजरात के अम्बाजी के पास की पहाड़ी पर 'गब्बर नी गोख' नामक जोत प्रज्वलित है जो सबको दिखाई देकर अचरज में डाले हुए है। यह ढाई हजार वर्षों से जल रही है। देवी अम्बा प्रतिदिन इसके दर्शन करती हैं। एक सौ आठ तारों से संयुक्त इसकी बाती कही जाती है। यह खुली होने पर भी कभी नहीं बुझी। ऐसी ही एक जोत अहमदाबाद की 'हठीजी की बाड़ी' में दो हजार वर्ष से जल रही है। इन्हें न कोई तेल-घी पूर रहा है और न कोई बाती ही दे रहा है। कितने ही आंधी तूफान वर्षा हवा आने पर भी इनकी जलते रहने की प्रक्रिया अविराम बनी हुई है।

नवरात्रा में देवस्थानों में नौ ही दिन-रात अखण्ड दीपक जलाये जाते हैं। दीवाली बैकुण्ठ चतुर्दशी पर अनेक जगह भूत-प्रेत तथा दिव्यात्माओं के लगने वाले मेलों का वर्णन करते उनके द्वारा चित्तौड़ के किले पर देखे गये मेले के उल्लेख भी अचरज भरे हैं। जब भी आततायियों के आक्रमण हुए तब देवस्थानों को नष्ट-भ्रष्ट करते उन्होंने पर्याप्त धनराशि हड़पी पर तब भी देवताओं द्वारा अकूत धनमाल अदृश्य सुरक्षित कर दिया गया। ऐसे अनेक खजाने बचे रहे और देव-प्रतिमाएं अन्यत्र सुरक्षित हो गईं।

पानी पर पैदल यात्रा

पानी पर पैदल चलने की बात बड़ी अनहोनी और विचित्र लगती है परन्तु उदयपुर की पीछोला झील में तीन-तीन साधुओं ने पानी पर चलकर न केवल सबको चकित ही किया अपितु महाराणा से जागीरी तक प्राप्त कर ली।

एकबार पीछोला की परली पार स्थित हनुमानघाट पर बड़े नामी खाकीजी आये। महाराणा शंभुसिंह ने उनके दर्शन करने की इच्छा की। खाकीजी को यह बात कहलवाई गई तो उन्होंने कहा कि महाराणा यहां तक आने का कष्ट न करें। मैं स्वयं पानी पर चलकर महल पहुंचूंगा।

खाकीजी की इस बात पर सबको बड़ा अचरज हुआ। महाराणा ने खाकीजी के सम्मानार्थ अपनी ओर से पंचदेवरी घाट तक नाव भिजवाई। उधर खाकीजी ने रामद्वारा के महाराज को भी पानी पर चलने को कहलवा दिया। महाराज को इस बात पर गुस्सा आया कि खाकीजी उनकी भी परीक्षा लेना चाहते हैं परन्तु महाराज भी कम पहुंचे हुए नहीं थे। उन्होंने अपनी तैयारी कर ली और एक साधु को जाजम लेकर पानी पर बिछवाने को कह दिया। जब जाजम बिछ गई जब उसके चारों कोनों पर चार साधु बिठा दिये और बीच में स्वयं महाराज विराजमान हो गये। देखते-देखते जाजम पानी पर सर्र से चल पड़ी। अपार भीड़ ने यह अजूबा देखा।

इधर खाकीजी पूरे लवाजमे के साथ गाते बजाते चल पड़े। पानी पर पैदल यात्रा की ऐसी कल्पना स्वप्न में भी किसी को नहीं थी। यह यात्रा शाही सवारी जैसी लग रही थी। उन्हीं दिनों गड़्या देवरा के वहां एक सांई ठहरे हुए थे। उनके भक्तों ने जब पानी पर चलने की खबर उन्हें दी तो वे कब पीछे रहने वाले थे। उनके पास केवल उनका चिंपिया था। उन्होंने तत्काल उसे पानी में फेंका जिससे वह पानी पर खड़ा हो गया । सांई देखते-देखते उस चिंपिये पर सवार हो गये। फिर क्या था, चिंपिया घोड़े की तरह सरपट चल पड़ा। सांई का यह करिश्मा देख लोग दांतों तले अंगुली दबाते रह गये।

कहा जाता है कि महाराणा ने खाकीजी और महाराज दोनों को अपना गुरु बनाया और उन्हें दस-दस हजार रूपयों की जागीर दी। सांई भी इससे वचित नहीं रहे। उन्हें भी चार हजार की जागीर दी। ऐसी ही एक घटना चांदपोल बाहर स्थित श्री बड़ा रामद्वारा के परमहंस ध्यानदास महाराज के समय घटी।

यहां के महंत नरपतराम रामस्नेही ने बताया कि ध्यानदास महाराज की तपस्या से आकृष्ट होकर महाराणा भीमसिंह ने रामद्वारा के लिए स्थान अर्पण किया। उसी समय पीछोला झील पर जाजम बिछाकर अठारह संतों ने उस पर बैठ कर राम नाम के सत्य की उद्घोषणा करते हुए नाव की तरह उस जाजम को पानी पर चलाया जिसे देख न केवल वहां उपस्थित श्रद्धालुजन अपितु स्वयं महाराणा भीमसिंह भी इस अद्भुत दृश्य को देख चकित हुए थे। उल्लेखनीय है कि आज भी ध्यानदास महाराज की कंठी-माला, चादर तथा हस्तलिखित वाणीजी रामद्वारा की अमूल्य धरोहर बनी हुई है।

- म. भा.

प्रोस्टेट : कारण और निवारण

- डॉ. गौरांग गाँधी -
यूरो सर्जन, कंसल्टैंट यूरोलॉजिस्ट एवं एंड्रोलॉजिस्ट

मुझे प्रोस्टेट होने पर तुक्तक ने सबकी सहमति से डॉ. गौरांग गांधी से सम्पर्क कर अहमदाबाद के राजस्थान हॉस्पिटल में मेरा ऑपरेशन कराया लेकिन पूर्णतः ठीक नहीं होने पर डॉ. गांधी ने दूसरी बार दूरबीन से मेरा ऑपरेशन कर स्वास्थ्य लाभ दिया। वहीं हमने डॉ. गांधी से प्रोस्टेट विषयक कारण और निवारण संबंधी एक आलेख लिखने का अनुरोध किया जिसे हम यहां सादर प्रकाशित कर रहे हैं ताकि शब्द रंजन से जुड़े पाठक भी उससे लाभान्वित हो सकें। डॉ. गौरांग गांधी के संपर्क नं. 98250-43962 हैं। - डॉ. महेन्द्र भानावत

प्रोस्टेटग्रंथि पुरुष के प्रजनन तंत्र की एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथि है। यह प्रत्येक पुरुष में होती है। इसका रांग लाल-भूरा होता है। यह सोपारी एवं अखरोट के आकर की 3×2×1 से.मी. की ग्रंथि है। मूत्राशय के अंदर मूत्र का संचय होता है। जब मूत्रत्याग की अपेक्षा होती है तब मूत्रमार्ग के द्वारा मूत्र शरीर से बाहर निकल जाता है। मूत्राशय में से मूत्रमार्ग शुरू होता है। उस जगह के बाहर चारोंओर के भाग में प्रोस्टेटग्रंथि जुड़ी हुई होती है। मूत्रमार्ग में गूदा के ठीक ऊपर की जगह यह स्थित होती है।

(1) यह ग्रंथि दूधिया रंग के शुक्राणु को वहन करने वाले वीर्य के प्रवाही तत्व का निर्माण करती है। (2) शुक्राणु को आवश्यक पोषण प्रदान करती है। (3) पौरूषेय के लिये जरूरी टेस्टोस्टीरोन नाम के अन्तस्त्राव को डाय हाइड्रो टेस्टोरोन में रूपान्तरित कर उसे कार्यान्वित करती है। (4) मूत्ररोगों के चेप से रक्षण के लिए उपयोगी तत्व का निर्माण करती है।

प्रोस्टेट ग्रंथि के रोग :

(1) बिनाइन प्रोस्टेटिक हाईपर प्लासिया (2) प्रोस्टेट कैंसर (3) एक्यूट प्रोस्टेटाइटिस (प्रोस्टेट ग्रंथि में अचानक लगने वाला चेप) (4) क्रोनिक प्रोस्टेटाटिस (प्रोस्टेटग्रंथि में लंबे समय तक रहने वाला चेप)

प्रोस्टेट ग्रन्थि का बढ़ना :

जन्म के समय से लेकर वृद्धावस्था तक शरीर के प्रत्येक अंगों में बदलाव होता रहता है। उसी तरह प्रोस्टेटग्रंथि में बदलाव होता है। साधारणतया बचपन से वृद्धावस्था तक हर अंग बढ़ता है और अवस्था प्राप्त होने पर उसमें कमजोरी आती है। उसका कद छोटा होने लगता है पर इसके विपरीत प्रोस्टेटग्रंथि उम्र के साथ-साथ बढ़ती जाती है। जब बाल सफेद होने लगते हैं। चमड़ी में करचली पड़ने लगती है। सुनने में अक्षमता आती है। दांतों का गिरना आरंभ होता है। आंखों में मोतिया आता है तब प्रोस्टेटग्रंथि उम्र के साथ बढ़ती है और व्यक्ति को मूत्रत्याग करने में अवरोध पैदा करती है। मूत्रत्याग में तकलीफ होती है।

प्रोस्टेट की समस्या :

प्रोस्टेटग्रंथि में वृद्धि वृद्धावस्था के कारण होती है। 50 वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को यह अपवाद स्वरूप होती है। 50 वर्ष के पश्चात यह धीरे-धीरे बढ़ना आरंभ करती है। 60 वर्ष से ऊपर के आधे से अधिक लोगों में यह समस्या होती है और 70 वर्ष से ऊपर के 80 प्रतिशत व्यक्तियों में यह समस्या होती है। 90 वर्ष से ऊपर के 90 प्रतिशत व्यक्तियों में यह रोग होता है और 100 वर्ष के उम्र के प्रत्येक व्यक्ति को इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

युवावस्था में सोपारी के आकार की यह ग्रंथि उम्र बढ़ने के साथ-साथ छोटे नींबू के आकार कर पसरंगी के कद के समान की बन जाती है। प्रोस्टेटग्रंथि के बढ़ने का कोई निश्चित कारण मालूम नहीं हो सका है पर यह माना जाता है कि उम्र बढ़ने के साथ शरीर में होने वाले अन्तःस्त्रावों का संतुलन बिगड़ने के कारण डायहाइट्रोस्टोरोन नामक अन्तःस्त्राव के प्रभाव से प्रोस्टेटग्रंथि का बढ़ना प्रारंभ होता है।

प्रोस्टेटग्रंथि मूत्रमार्ग के बाहर की दीवार मजबूत होने से अंदर के भाग में अधिक बढ़ती है जिससे मूत्रमार्ग में दबाव उत्पन्न होता है और वह संकुचित हो जाता है। इस दबाव के कारण मूत्रत्याग आसानी से नहीं हो पाता है और मूत्रत्याग करने में जोर लगाना पड़ता है।

मूत्राशय में से पूर्णतः मूत्र नहीं निकलता है। थोड़ा पीछे रह जाता है जिससे बार-बार मूत्र त्यागने की शंका होती है। मूत्र त्यागने में लगने वाले जोर से मूत्राशय की दीवार के स्नायु कमजोर पड़ते हैं और पेशाब पूरा निकालने की शक्ति कमजोर पड़ती है। इससे अधिक पेशाब मूत्राशय में रह जाता है। कभी-कभी पेशाब पूर्णरूप से निकलना बंद हो जाता है। पेशाब अंदर रह जाने से चेप लगने की शक्यता रहती है। जब अधिक मूत्र मूत्राशय में रह जाता है तो वह दबाव उत्पन्न करता है और किडनी में सूजन आने लगती है और वह खराब होने लगती है।

प्रोस्टेट की समस्या के लक्षण :

(1) पेशाब करने के प्रारंभ में थोड़ा इंतजार करना पड़ता है फिर पेशाब आना प्रारंभ होता है। (2) पेशाब की धार धीरे-धीरे आती है। पेशाब दूर नहीं गिरकर पैर के पास गिरने लगता है और थोड़ा-थोड़ा आता है। (3) पेशाब करने में अधिक समय लगता है। (4) पेशाब रुक-रुक कर आता है। (5) पेशाब करने के पश्चात भी पेशाब अंदर रह गया है, यह शंका बनी रहती है। (6) पेशाब करने में जोर लगाने से पेशाब की गति कमजोर अथवा बंद हो जाती है। (7) बार-बार पेशाब करने जाना पड़ता है। (8) रात्रि में बार-बार पेशाब करने जाना पड़ता है। (9) पेशाब करने की जरूरत नहीं लगने पर भी पेशाब हो जाता है।

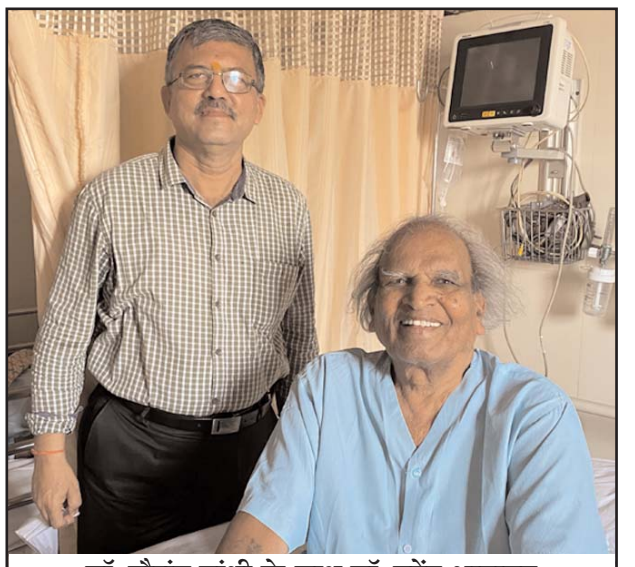

डॉ. गौरांग गांधी के साथ डॉ. महेंद्र भानावत

(10) कभी-कभी पेशाब बिलकुल बंद हो जाता है और पेशाब का भराव होने से पेडू का भाग फूल जाता है और उसमें दर्द होता है। (11) मूत्राशय में रुके हुए पेशाब से चेप उत्पन्न होता है। उससे पेशाब में जलन होती है और बुखार आ जाता है। (12) किसी भी प्रकार के दुःखावे के बगैर खून आने लगता है। (13) मूत्राशय में अधिक समय तक पेशाब रहने से किडनी पर दबाव उत्पन्न होता है और किडनी खराब होती है। उससे मुंह और पैरों पर सूजन आने लगती है। भूख नहीं लगती है। उलटी आने लगती है। ऊबके आने जैसी तकलीफें उत्पन्न होने लगती हैं।

प्रोस्टेटग्रंथि की समस्या का निदान :

इस तरह की समस्या उत्पन्न होने पर यूरोलॉजिस्ट की सलाह लेनी चाहिए। डॉ. आपकी प्रोस्टेटग्रंथि की वृद्धि के कारण जो तकलीफ है उसकी शारीरिक तापस करेंगे और उन तकलीफों के निवारण के लिए नीचे मुजब की जाचें करवाएंगे।

(1) स्कोर (इंटरनेशनल प्रोस्टेटिक सिस्टम स्कोर) (2) डिजिटल रेक्टल एग्जामिनेशन (3) खून-पेशाब की जांच (4) सोनोग्राफी (5) यूरोफ्लोमेटरी (6) सिस्टोस्कोपी।

प्रोस्टेटग्रंथि के उपचार की तीन विधियां इस प्रकार हैं - (1) ऐलोपेथिक (2) आयुर्वेदिक (3) वनस्पतिजन्य

आधुनिक समय में एलोपेथिक दवाओं द्वारा प्रोस्टेटग्रंथि के उपचार में 40 से 60 प्रतिशत तक लोगों को लाभ मिल जाता है। 100 में से 30 लोगों को इन दवाओं से 100 प्रतिशत लाभ होता है। उनको ऑपरेशन (शैल्यक्रिया) करना नहीं पड़ता है। अन्य 30 लोगों को कुछ लाभ होता है फिर भी ऑपरेशन संभवतः करना पड़ सकता है जबकि बाकी के 100 में से 40 लोगों को दवा से पूर्ण लाभ नहीं हो सकता।

उन्हें ऑपरेशन की जरूरत होती है। तीन माह तक दवा लेने के पश्चात उससे होने वाले लाभ के बारे में जांच करके नक्की किया जाता है। प्रोस्टेट की तकलीफ वाले दर्दियों को सर्दी ऋतु में अधिक शराब सेवन, खांसी की दवाई, एलर्जी मिटाने वाली दवाई, श्वांस की तकलीफ की दवाई और कब्ज की अधिकता रहने से पेशाब की तकलीफों में बढ़ोतरी होती है।

प्रोस्टेट (बी.पी.एच.) का ऑपरेशन तब करायें जब - (1) प्रोस्टेट की दवाइयों के बावजूद लाभ नहीं हो रहा हो (2) दवा लेने के बावजूद तकलीफ बढ़ने लगे (3) पेशाब का बार-बार चेप लगे (4) पेशाब में खून आने लगे (5) पेशाब रुक-रुक कर छलकने लगता है और कपड़ों पर गिरने लगे (6) पेशाब संपूर्ण तरह से बंद हो जाये (7) पेशाब की थैली में पथरी बनने लगे (8) पेशाब थैली में रह जाने से मूत्राशय की दीवार कमजोर पड़ने लगे (9) मूत्राशय में रह जाने वाले पेशाब से किडनी पर दबाव बढ़ने से किडनी फूलने लगे।

शल्यक्रिया - ऑपरेशन :

(1) चीरफाड़ द्वारा (2) दूरबीन द्वारा (3) अन्य

चीरफाड़ :

(1) मिलिन्स प्रोस्टेक्टॉमी (2) फ्रेयर्स प्रोस्टेक्टॉमी (3) पेरिनिअल प्रोस्टेक्टॉमी

दूरबीन द्वारा :

मूत्रमार्ग से दूरबीन द्वारा अनेक प्रकार के ऑपरेशन होते हैं। यथा- (1) ट्रांस्यूरेथ्रल रिसेक्षन ऑफ प्रोस्टेट (2) ट्रांस्यूरेथ्रल इनसिशन ऑफ प्रोस्टेट (3) ट्रांस्यूरेथ्रल प्लाजमा रिसेक्शन ऑफ प्रोस्टेट (4) ट्रांस्यूरेथ्रल इन्यूक्लिएशन ऑफ प्रोस्टेट (5) ट्रांस्यूरेथ्रल लेसर प्रोस्टेटेक्टोमी (6) ट्रांस्यूरेथ्रल अकवा ऐबलेशन ऑफ प्रोस्टेट (7) प्रोस्टेटिक यूरेथ्रल लिफ्ट (8) ट्रांस्यूरेथ्रल माइक्रोवेव हायपरथेरमिआ ऑफ प्रोस्टेट।

इसमें ट्रांस्यूरेथ्रल रिसेक्शन ऑफ प्रोस्टेट विधि का सबसे अधिक सफल और समय पर खरे उतरने वाल ऑपरेशन है अतः इसे गोल्ड स्टेंडर्ड ऑपरेशन भी कह सकते हैं। इस ऑपरेशन में सर्वप्रथम मूत्रमार्ग से दूरबीन द्वारा प्रोस्टेटग्रंथि और मूत्राशय का अवलोकन किया जाता है।

उसके पश्चात विशेष प्रकार के साधनों लूप द्वारा, इलेक्ट्रिक करंट प्रसार कर, आलू की चिप्स की तरह प्रोस्टेट की गांठ के छोटे-छोटे टुकड़े किये जाते हैं। प्रोस्टेट की गांठ के पूरे टुकड़े हो जाने के पश्चात विशेष प्रकार के साधन से उन्हें मूत्राशय में से बाहर निकाला जाता है। प्रोस्टेट की गांठ को निकालने के बाद प्रोस्टेट की दीवार में आयी हुई खून की नलियों को लूप द्वारा जलाकर उनमें से खून निकलने को बंद किया जाता है।

उसके पश्चात मूत्राशय में से मूत्र बाहर निकालने में सहायक केथेटर को मूत्रमार्ग में लगाया जाता है। केथेटर के ऊपर प्रकृति मूत्रमार्ग का नया रास्ता तैयार कर देती है। 48 से 72 घंटे बाद केथेटर निकाल लिया जाता है। मूत्रमार्ग में से प्रोस्टेटग्रंथि को दूर कर दिये जाने से दर्दी खुलकर पेशाब कर पाता है।

लेसर रिसेक्शन ऑफ प्रोस्टेट :

लेसर फाइबर से प्रोस्टेट के छोटे-छोटे टुकड़े किये जाते हैं जिसे खास प्रकार के साधन से बाहर निकाल जाता है। इससे मूत्रमार्ग का दबाव दूर हो जाने से दर्दी खुलकर पेशाब कर सकता है।

दूरबीन द्वारा ऑपरेशन के लाभ :

(1) दूरबीन से ऑपरेशन करने पर शरीर पर कोई घाव या चीरा नहीं करना पड़ता। (2) टांके लेने की आवश्यकता नहीं होती। (3) घाव पकजाने की या दुखने की शिकायत नहीं होती। (4) ऑपरेशन के दूसरे दिन से ही सामान्यरूप से हलन-चलन किया जा सकता है। (5) हॉस्पिटल में केवल 2-3 दिन के लिए ही रुकना होता है। (6) सामान्यतः खून की जरूरत नहीं होती है। (7) हॉस्पिटल से छुट्टी के पश्चात दर्दी तुरंत सामान्य कार्य कर सकता है और नौकरी पर जा सकता है।

ऑपरेशन के बाद बीमार को होने वाले लाभों के लिए दौड़ लगाना, तेज गति से नियमित चलना, कसरत करना चाहिए ताकि प्रोस्टेट की गांठ बढ़ने से रूक सके। गूदामार्ग के स्नायुओं को थोड़ी देर संकोचकर, खींचकर अंदर रखने और फिर ढीला छोड़ने की कसरत करने से प्रोस्टेटग्रंथि को बढ़ने से रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्त बचपन से ही योगासनों द्वारा (1)कपालभाति (2) योगमुद्रा (3) अर्धमत्स्येंद्रासन (4) वक्रासन (5) गोमुखासन (6) बद्धकोणासन (7) वीरासन (8) जानुशिरासन (9) धनुरासन करने से प्रोस्टेट की तकलीफ कम होती देखी गई है। ●

स्मृतियों के शिखर (146) : डॉ. महेन्द्र भानावत

देवता-मनुष्यों का हरियाली अमावस्या का मेला

किलों की संस्कृति हमारे यहां बड़ी अजूबी, अनूठी, अलौकिक और कई प्रकार के रहस्य-रोमांचक किस्सों से भरी मिलेगी। इतिहास के पन्नों में बहुत कुछ पढ़ने पर भी लगता है जैसे बहुत कुछ जानना अभी शेष रह गया है। जानने की यह लालसा बराबर बनी रहती है। सैकड़ों बरसों से हजारों-हजार किस्से-कहानी और विविध घटना-प्रसंग लोकजीवन की मुख्यधारा से जुड़ते हुए भी नित नवीन लगते हैं और अद्‌भुत ताजगी लिए खण्डहरों में भी जीवन्त वैभव का एहसास देते हैं।

लोकदेवता कल्लाजी राठौड़

किलों में सिरमौर चित्तौड़ का किला कहा गया है- 'गढ़ तो चित्तौड़गढ़।' वास्तव में यह है भी। प्रारम्भ में यह चित्रकूट के नाम से बसाया गया। लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य ने इसे बसाया। उसे इसकी प्रेरणा अपने भाइयों के झगड़े के दौरान मिली।

सरजुदासजी

झगड़े में चन्द्रगुप्त ने अपने भाइयों को ललकार दी और यह कहकर निकल पड़ा- 'यदि एक अलग चित्रकूट न बसाया तो मुझे असल मरद मत कहना।'

आज जो डियर पार्क है, वही प्रारम्भ का चित्रकूट है। इसे अजीब संयोग ही कहना चाहिये कि जब से चित्रकूट की नींव पड़ी तब से यहां रक्त ही बहता रहा। या तो यहां जौहर हुए या फिर जुद्ध-युद्ध। जुद्ध और जौहर का ही तो इतिहास है चित्तौड़। इसे कई मिटाने आये पर वे स्वयं मिट गये। चित्तौड़ आज भी अमिट अमर है।

इसी चित्तौड़ के किले पर बड़े विचित्र मेले भरते हैं। दीवाली की घनी अन्धेरी रात में भूतों का मेला और देव दीवाली को दिव्य आत्माओं मेला लगता है मगर कौन इन्हें देख पाता है। मनुष्य की कोई आंख इन्हें अपने में दृश्यमान नहीं कर सकी। लोकदेवता कल्लाजी की असीम कृपा से उनके सेवक सरजुदासजी के साथ ये दोनों मेले मुझे देखने को मिले।

कल्लाजी चक्रवात युद्ध के धनी थे। उन्होंने अपने हाथ में कभी ढाल नहीं ली। उनके दोनों हाथों में तलवारें रहती थीं जो आगे-पीछे ऊपर-नीचे जैसा चाहो वैसा वार कर गाजर मूली की तरह दुश्मनों का सफाया करतीं।

सन् 1984 की हरियाली अमावस्या को इन्हीं कल्लाजी ने मुझे यहां एक मेला ऐसा दिखाया जिसमें देवता मनुष्य वेश धारण कर अपनी लीला दिखाते हैं। यह गत पांच सौ वर्षों से भर रहा है। मोतीबाजार से लेकर कालिका मन्दिर तक भरने वाले इस मेले में अधिक भीड़ नहीं होती। अब तो यह सांध्यकालीन मेला ही अधिक रह गया है। इस मेले में हमारे साथ हिन्दी प्राध्यापिका कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता तथा मेरी बिटिया कविता भी थी।

सायं पांच बजे बिड़ला धर्मशाला से हम मेला देखने निकले। मोतीबाजार से नर-नारियों और बच्चों की चहल-पहल शुरू हो गई थी। घूमते-घामते हम विजयस्तंभ पहुंचे। वहां चबूतरी पर अपने पांव लटकाये एक फुग्गेवाला देखा। उसके आसपास बच्चों की भीड़ थी। सरजुदासजी में भावित कल्लाजी ने हमें अंगुली का इशारा दिया। हम समझ गए कि फुग्गे बेचनेवाला कोई देवपुरुष है। पास ही चाय की दुकान थी। बैंच पर बैठकर हम चाय की चुस्की लेते रहे और फुग्गेवाले को निहारते रहे।

यह फुग्गेवाला फकीर तहमत पहने था। उसके कंधे पर झोली लटकी हुई थी। कत्थई रंग के सिर के बाल और वैसी ही उसकी दाढ़ी थी। उसका एक हाथ छोटा था और छोटा ही एक पुराना पम्प था जिससे फुग्गे में हवा भर-भर कर वह बच्चों को देता उनका मन बहला रहा था। उसकी निगाहें बड़ी नेक, सूरत बड़ी भोली और शक्ल बड़ी सौभ्य थी। बच्चे उससे फुग्गे खरीदकर बड़े मस्त मगन हो रहे थे।

कल्लाजी हमारी उत्सुकता ताड़ गए फलस्वरूप वे हमें उसके नजदीक ले गए। हम फुग्गेवाले के पास जाकर खड़े हो गए। हमारे जाने से उसमें कोई फर्क नहीं पड़ा। वह अपने काम में खोया रहा। हां, वाणी तो हम उसकी नहीं सुन सके पर हमें यह अवश्य लगा कि कल्लाजी और उसके बीच कोई वार्तालाप जारी है। दोनों देवगण बड़े उल्लसित मन से बात करने में लगे हैं। इस बीच हमारे कान में फुग्गे बेचनेवाले उस देव-फकीर का अत्यन्त ही विनोदभरा यही जुमला सुनाई दिया- 'फेरफार तो करनोई पड़ै।'

इतने में सुधाजी ने उसे एक फुग्गा देने को कहा। उसने झोली में हाथ डाला। एक फुग्गा-ककड़ी निकाली। पम्प से उसमें हवा भरी और कविता को थमादी। उसका रंग नीला था। सुधाजी ने एक रूपया दिया तो उसने अपना कमीज ऊंचा कर बनियान की जेब से पैसों की पोटली निकाली और उसमें से एक अठन्नी निकाल देनी चाही पर हमने नहीं ली और हाथ जोड़कर वहां से आगे बढ़े। फकीर अपने हाल में मस्त था। उसने हमारी ओर देखा तक नहीं परन्तु हम तो उसे कदम-कदम पर पीछे मुड़-मुड़ कर घूर-घूर कर देखते आगे बढ़ते रहे।

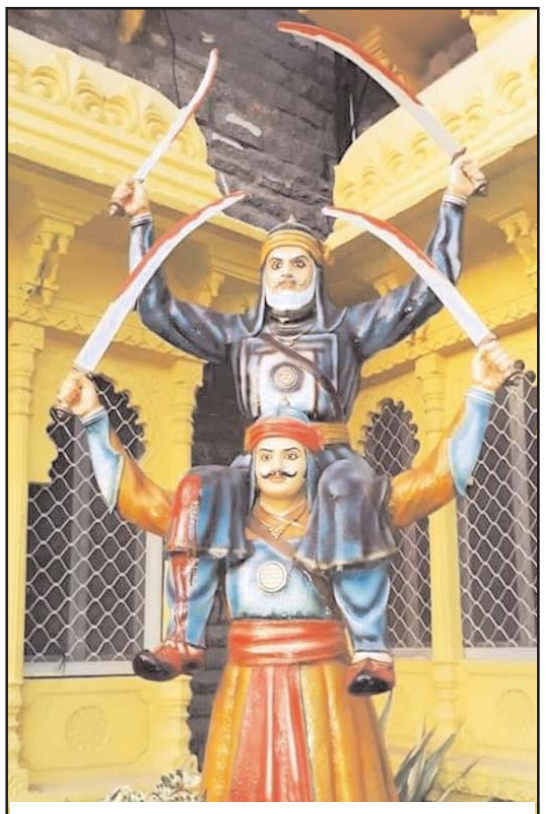

जयमल-पत्ता

चलते-चलते हम पत्ता महल पहुंचे। मुख्य द्वार से ज्योंही हमने भीतर प्रवेश किया कि महल से एक बूढ़ा व्यक्ति आता दिखाई दिया। उसके सिर पर मेवाड़ी लहरिया बंधा था। ऊंची धोती और अंगरखी पहन रखी थी। अपने दोनों हाथों से उसने अपने कंधे पर रखी लकड़ी थाम रखी थी। हमने उसे हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उसने बड़ी मुस्कान के साथ हमारा अभिवादन स्वीकार किया। अपनी सफेद दाढ़ी में वह व्यक्ति बड़ा ही सरल सौम्य चित्त का था। हम उसे निहारते रहे पर उसने पीछे मुड़कर झांका तक नहीं।

चित्तौड़ के सारे महल देख जाइये- कुंभा महल, रतनसिंह महल, मीरां महल, भोजराज महल, पद्‌मिनी महल। इन सबसे अलग-थलग पत्ता महल लगेगा। एक तो यह महल इतना साफ सुथरा है कि जैसे प्रति क्षण कोई इसे बुहार रहा हो। दूसरे खण्डहर होने पर भी पत्थर का एक टुकड़ा वहां नहीं मिलेगा। न कोई बांकी टेढ़ी, ढही धसी दीवालें मिलेंगी। तब का रंग आज भी अपना गाढ़ापन लिए दिखाई देगा।

कल्लाजी ने बताया कि आज भी पत्ताजी यहां बिराजमान हैं, इसीलिए यहां कांच की तरह साफ-सफाई है। सारा महल बड़े करीने से सुथराया हुआ है। यह अद्‌भुत आश्चर्य ही रहा कि इधर मैं भैरूजी का चित्र लेने की तैयारी कर रहा था कि उधर पत्ताजी के वहां से सुधाजी ने आवाज दी कि सब काम छोड़कर पहले जल्दी से इधर आओ। मैं तत्काल दौड़ा-भागा वहां पहुंचा। देखता हूं कि एक पूरा मालपुए का भरा दोना वहां रखा हुआ है। कल्लाजी ने वह प्रसाद हमें दिया और कहा- 'पत्ताजी स्वयं ने इसे भिजवाया है। आज हरियाली अमावस्या है। घर-घर में मालपुए बनते हैं तो हम लोग उससे कैसे वंचित रह जायें।'

भैरूजी पत्ताजी के इष्टदेव थे। पत्ताजी का स्थान स्वयं पत्ताजी ने अपनी मृत्यु के बाद थरपित कराया। बीच का महल पूरा-का-पूरा गिरा हुआ नहीं होकर उतारा हुआ है। पत्ताजी नहीं चाहते थे कि उनकी मृत्यु के बाद उनके महल में कोई प्रवेश करे। इसलिए उन्होंने मरने के बाद उस पूरी मंजिल को ही उतार लिया। केवल एक तरफ का हिस्सा रहने दिया जो सड़क से दिखाई देता है। इसी में उनका निवास बना हुआ है।

यहीं हमने खजाना गृह देखा जहां धन-दौलत रखी रहती थी। ऐसे खजाने के गुप्तद्वार तो यहां हर महल हवेली के साथ रहे हैं। यह अलग बात है कि उसे साधारण व्यक्ति नहीं देख-जान पाता है। कोई आश्चर्य नहीं, अब भी कई जगह के खजानें यों-के-यों भरे पड़े हों।

जयमल-पत्ता महल

इसी महल में हमने दासियों के भग्न-निवास देखे। एक दासी तो ऐसी थी जिसने जीतेजी कई बार राजपरिवार के आभूषण चुराये पर मुख्य दासी होने के कारण वह स्वयं तो कभी अपराधी नहीं बन सकी लेकिन जिस दासी पर उसकी निगाह टेढ़ी होती उसकी खूब पिटाई करवाती। जबरन ऐसी पिटाई देख वह बड़ी राजी होती। बहुत सारा धन एकत्र कर भी वह दासी जब मरी तो सारा धन अपने निवास में गढ़ा हुआ ही छोड़ गई। एक खजाना तो हमने ऐसा देखा जिसे पत्ताजी ने अपनी मृत्यु के बाद किसी को स्वप्न दे बख्शीश किया।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 जुलाई 2022

सम्पादकीय

अल्पायु बच्चों में लासण

हमारा देश अनेक विविधताओं के रहते अनेक विचित्रताओं वाला भी है। अपनी परंपराओं का विशेष आस्थाओं और विश्वासों के सहारे संरक्षण देने की परंपरा भी कोई यहां सीखे। इतिहास लेखकों ने मनमाने ढंग से बिना देखे-समझे इतिहास के अकूत पन्नों में जो लेखन किया, धीरे-धीरे बहुत-सा तो व्यर्थ ही मान लिया गया। इस पर बहसबाजी भी गर्मजोश लिए बहुत हुई जा रही है।

फिर यहां के सामान्य सहज एवं साधारण ढंग से जीवनबसर करने वाले समाज को तो किसी ने कोई तवज्जु ही नहीं दी जबकि भारत की अन्तरात्मा, भारतमाता तो उन्हीं के साथ गुजरबसर कर रही है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तजी ने इसीलिए 'भारतमाता ग्रामवासिनी' लिखा।

अल्पायु जीवित बच्चों को कौन महत्त्व देगा? कौन समझेगा कि इनकी देखरेख जरूरी है। ये ही देश के होनहार हैं जो मां क सच्चे पूत के रूप में जोशीले गर्वीले बन देश सेवा और देशप्रेम के असली पहरुए बनेंगे।

ऐसी स्थिति में माताएं उनका बहुत ध्यान रखती हैं। चराचर जगत में अपने बालकों का सबसे अधिक लालन-पालन माताओं के जिम्मे ही रहता है लेकिन कई कारणों से बच्चे कई बीमारियों से ग्रस्त हो अल्पायु में ही राम को प्यारे हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में माताएं इस उम्मीद में रहती हैं कि भाग्य की विडम्बना से उसकी कोख तो सूनी हो गई पर अगला जन्म वह जहां भी, जिस कोख में धारण करे, अल्पायु नहीं रह दीर्धजीवी बने। लम्बी आयु ले।

इसके लिए उस बालक के मृत-शरीर के किसी भी हिस्से में वह अपनी अंगुली से काजल, हिंगलू, कुकुम या फिर घी का ही निशान लगा देती है। यही निशान मेवाड़ में 'लासण' नाम से जाना जाता है। इसके बाद ही मृत-बालक को खड्डा खोद श्मशानी भूमि में दफन किया जाता है।

लासण नामक इस चिन्ह का पता उस बच्चे के अगले जन्म में लगता है जब उसके शरीर के उसी भाग पर वह चिन्ह जो पूर्वजन्म में लगाया गया, देखने को मिलता है। यह चिन्ह जिसका लगाया गया होता है वही रंग लिये मिलता है।

लासण की इस क्रिया-विधि-परम्परा का विज्ञ-महानुभाव कई तरह से अध्ययन-अन्वेषण कर सकते हैं। विदेशियों ने तो किया भी है और इस भारतीय परम्परा को नमन भी किया कि ऐसी वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के लिए तो भारत में ही जन्म लेना होगा।

श्वेत कमल सा जगमग

- डॉ. रमेश 'मयंक'-

शब्द रंजन के 15 मई के अंक में प्रकाशित 'हथेली पर श्वेत कमल-सा खिलता उदयपुर' आलेख से प्रेरित हो रचित

झिलमिल-झिलमिल करती
लहरों के बीच
जग मन्दिर- जग निवास महल
जल में खिलते श्वेत कमल,
उदयपुर शहर में शोभायमान विशेष
राजमहल पर सुबह-शाम
स्वर्णिम आभायुक्त परिवेश,
दिन में रात में रजत सी यह
झीलों की नगरी
प्रकृति सहचरी
उज्वल इतिहास
जिसका कीर्तिमान
सौरभ मन मोहक अति सुन्दर
धरती पर स्वर्ग सा गुणगान।

जगह-जगह
स्वर्ण रश्मियों का
झीलों के जल पर प्रभाव है,
देखी- दूधतलाई
धायमां पन्ना की याद करते-करते
आंखों की तलाई भर आई
स्वामी सुत को बचाने वाली ने
निज सुत की भेंट चढ़ाई।

मोतीमगरी पावन स्मारक
इतिहास में अंकित
मातृभूमि की मान मर्यादा के रक्षक
चेतक की सूझबूझ वाले
इतिहास के पृष्ठ खुलते बार-बार
धन्य धरा धाम और सेनानी
धन्य चेतक नीले घोड़े के सवार।

अरूणोदय ने
जिस धरती के माथे को चूमा
वह वसुन्धरा
वीरों के शोणित से सिंचित
प्रताप के तेज से आभासित
बनी आजादी की मशाल
पन्नाधय की ममता ने
जिसे पाल-पोष कर बड़ा किया
उसने
एकलिंग का दीवान होकर रहने का
ज्ञान पा लिया।

घर-घर तुलसी
घर-घर ठाकुर पूजा की तरह
घर-घर हस्तकला उद्योग
काष्ठ निर्मित खिलौनों का संसार
सुथारवाड़ा में खैरादी हुनर को
पर्यटकों- बाल गोपालों का
भरपूर स्नेह-सम्बल मिला।

नावघाट से
नौका में बैठकर
झील की सैर पर आए
सौर ऊर्जा की महत्ता को
आत्मसात कर पाए।
यहीं गणगौर घाट पर बैठकर
बंशीलाल बांसुरी बजाते थे
बंशी के प्रेम की तान
पीछोला की लहरों को सुनाते थे
गौरी गणगौरी
दौड़-दौड़ आती थी
लहरें बिना स्पर्श किये
कब रह पाती थीं?

हिमालय से भी प्राचीन पर्वत
अरावली की पहाड़ियों पर
प्रातः की प्रथम किरण से ही
चमक फैल जाती है
साधना की स्थली
देवी-माता के मंदिरों की
घंटा-ध्वनियां
आशीष की आशाएं जगाती हैं।

शिक्षा का संकल्प लेने वाले इस शहर में
विद्या बावला पहाड़ पर लालटेन बन
ज्ञान की पाठशाला का विश्वास फैलाता
विद्यापीठ
जन मंगल का भाव जगाता
सुदूर आदिवासी अंधियारों में
प्रतिबद्धता का व्यापक विस्तार दर्शाता।

सहेलियों की बाड़ी
प्रकृति के साथ जीवन
गुलाबबाग
स्वस्थ पर्यावरण से
जुड़ जाता जन-जन
थोड़ी देर सैर हो जाए
सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता को
शीश नवाए
सरस्वती पुस्तकालय
पुस्तकों के अनमोल खजाने से
परिचित कराए
शब्द रंजन की पहचान को
अविस्मरणीय यादगार बनाए।

यहां की
झीलें जल प्रबंधन सिखाती हैं
पानी व्यर्थ न बहाएं
कल के लिए जल बचाएं
पानी की शुद्धता के लिए
अनिवार्यतः जलकुंभी हटाएं
जल में खिलते श्वेत कमल से
शहर में निखार लाएं
उदयपुर में कश्मीर जैसा
अहसास पाएं।

उदयपुर दरबार की पहली मोटर गाड़ी

विलायत से मंगवाई गई उदयपुर के महाराणा भूपालसिंहजी की पहली मोटर गाड़ी देखने पूरा शहर उमड़ पड़ा। उसको चलाने वाला ड्राईवर बहुत होशियार था मगर दरबार हेलहांटे, बिना उसकी परीक्षा लिए उसमें बिराजने को राजी नहीं हुए।

ठाकुर मनोहरलालजी

शुभ मूहूर्त देखकर चौगान में जिसे आज गांधी ग्राउण्ड कहते हैं, ड्राईवर की परीक्षा ली गई। इसके लिए दरबार ने अपने प्रमुख सरदार, मर्जीदान को बड़ी देर तक एक-एक कर भळावण देते कहा कि जब मोटर चौगान लाई जाय तब उसे आगे से, पीछे से, दायें तथा बांयें से, मोटी रस्सी से बान्ध दी जाय और उसे पकड़कर साथ-साथ रखवाले चलें ताकि जिधर भी मोटर का गड़बड़ाना हो उसे ठीक से चलाने में मदद मिल सके।

यही नहीं, मोटर चलाने का चौगान में रास्ता बनाया गया। चूना मिट्टी से लाइनें की गईं। फरमाया गया कि मोटर के मुड़ाव पर बहुत होशियारी रखी जाय। मोटर बहुत धीरे-धीरे चलाई जाय। देखने वालों की भीड़ उमड़ पड़ेगी जिससे कोई अनहोनी घटना नहीं हो, इसका पूरा बन्दोबस्त किया जाय।

ड्राईवर बड़ा बुद्धिमान, अनुभवी तथा पक्की उम्र लिये था मगर दरबार की गाड़ी चलाना, भीतर दरबार बिराजमान रहेंगे और सभी सिपेसरदारों, सलाहकारों के साथ शहर की उमड़ती भीड़ का रंगदार माहौल देख मन-ही-मन वह अनेक संकल्प-विकल्प और ऊहापोह लिये था।

ठीक समय दरबार का मोटर में बिराजना हुआ। सेवादार, रक्षादार सब चाकचौबन्द हुए अपनी-अपनी ड्यूटी पर सावधानी से तैनात थे। इस बीच ड्राईवर ने मोटर चलाना प्रारम्भ किया। जो रास्ता चिन्हित किया गया था उसमें बड़ी सफलता से होले-होले मोटर चलाकर उसके जी-में-जी आया।

सबने मारे खुशी के 'अन्दाता की जै, मेवाड़नाथ की जै' के जयकारे लगा अपना उल्लास व्यक्त किया। महलों में पधारकर दरबार ने ड्राईवर को शाबाशी कहलाई। इस अवसर को बाद में स्मरणीय बनाते महिलाओं के कोकिल-कण्ठों से गीत की यह पंक्ति निसृत हुई-

अन्दाता सैर करे मोटरमां,
डराईवर होले-होले हांक।

20 जून 2022 को कृष्णपुरा निवासी डॉ. पुरुषोत्तमलाल शर्मा (72) ने बातचीत के दौरान पुरानी स्मृतियों को खंगालते उपरोक्त घटना-प्रसंग के साथ लेखक को एक और प्रसंग इससे जुड़ता बताया और कहा कि उनके पिताश्री भंवरलालजी के फूफाजी मनोहरलालजी नाथद्वारा के पास दीयाण गांव के रहने वाले थे। फूफाजी के पिताश्री हष्टपुष्ट डीलडौल, भरी हुई तनाव देती मूंछें और रौबदार व्यक्तित्व लिये थे। गांव वालों पर उनका बड़ा स्नेहिल प्रभाव था।

महाराणा भूपालसिंहजी

एकबार वे अपने रौबीले कद-काठी वाले घोड़े पर सवार हो उदयपुर की ओर जा रहे थे कि सामने से दरबार का अपने समस्त काफिले सहित पधारना देख वे अपने घोड़े से उतरे और बुलन्द आवाज में 'खम्माघणी जुग-जुग जिओ पिरथीनाथ' कहकर मुजरा किया।

दरबार ने उनका मुजरा झेल पूछना कराई कि ऐसा तेजीला जोशीला सरदार कौन है? इस पर दरबार को बताया गया कि वे यहीं के पास के दीयाण के रहने वाले हैं और जाति के ब्राह्मण हैं।

इस पर दरबार ने फरमाया कि लगने को यह बड़ा ठाकुर लग रहा है। यह बात हवा की तरह पूरे चोखले में फैल गई तब सभी ने उन्हें 'ठाकुर साहब' कहना शुरू कर दिया। ठाकुर का यह सम्बोधन आज भी उनके वंशजों में विद्यमान है।

ठाकुर मनोहरलालजी ने भी अपने पिताश्री की तरह अच्छी पहचान बनाई। मनोहरलालजी भी वैसे ही प्रभावी व्यक्तित्व के धनी थे। अपनी मूंछों को वे सदैव तनी हुई रखते थे। पिताश्री के पश्चात दरबार की मोटर उन्होंने चलाई। वे साइकिल चलाने में भी निष्णात थे। एकबार उन्होंने फतहसागर की सांखियों पर साइकिल चला अपने कमाल से सबको विस्मित कर दिया।

- म. भा.

बर्फीली चोटियों, रेतीले टीलों और शतरंगी झीलों की रोमांचक यात्रा

हमारे देश में प्राचीनकाल से ही यात्राओं का सिलसिला अनवरत चला आ रहा है। ये यात्राएं अलग-अलग उद्देश्यों,

परिस्थितियों, मौसमों तथा मनोरथों से होती रही हैं। हमारी यात्रा सैर सपाटा करने की रही।

एक ट्रेवल एजेन्सी के द्वारा की गई उदयपुर से लेह की 21 से 26 जून 2022 की यह यात्रा हवागाड़ी की रही। इस यात्रा में हम चार मित्र-परिवार - रंजना-डॉ. तुक्तक भानावत, शैलेष-डॉ. श्वेता नागदा, दिलीप-पल्लवी जैन तथा अजय-मीना सरूपरिया 45 से 55 वर्ष के बीच की उम्र लिये थे।

जून मास की झुलसती तपन की तीव्रता से जब दिल्ली से लेह पहुंचे तो सर्द हवाओं का मौसम इतना बेइमानी लिये रहा कि हमारे साथ बीकाजी के खाने के मसालेदार पैकेट फूल के कुप्पे हो गये। क्रीम-ट्यूब तक फट गई। हवा का दबाव कम होने से हमारी स्वांसें भी प्रतिकूल हो गईं। इधर के वातावरण के अनुकूल बनने के लिए हमें पूरे दिन-रात यहां के होटल याख्सतो में गुजारनी पड़ी। होटल का गुलाबी गार्डन भांत-भांत के बड़े-बड़े गुलाबी फूलों से ऐसी महक मार रहा था कि सबकी तबीयत बाग-बाग खुशनुमा हो गई।

लेह के दर्शनीय स्थलों में हॉल ऑफ फेम महात्मा बुद्ध की जीवनधर्मिता के अनेक घटना-प्रसंगों से रू-ब-रू कराता है। यहां की पैंगोंग लेक जितनी देर देखो, उतने ही रंगों के सुरंगे दर्शन कराती है।

पैंगोंग के यहां की गई फिल्म 'थ्री इडीयट्स' की शूटिंग के दौरान जो उपकरण काम में लिये वे यहां सुरक्षित अवलोकनार्थ प्रदर्शित हैं। इनके साथ पर्यटक फिल्मी हीरो से इतराते देखे जा सकते हैं। यहीं हम गुरुद्वारा गये। वहां गुरुवाणी सुनी और लंगर का प्रसाद ग्रहण किया।

लहरों की पानीदार झांई में हल्के-गाढ़े नीले-पीले आसमानी-काले गुलाबी रंगों की पावन परतें जैसे अदला-बदली की होड़ लिये प्ररिदर्शित होती हैं। बर्फ के पहाड़ों पर याक की सवारी का लुत्फ पहलीबार उठाया गया। यह यहां का मुख्य पशु है जो बड़े सजेधजे परिवेश में आपको बिठा सैर कराता है।

आगे का मैदान राजस्थान के रेगिस्तानी टीलों की याद दिलाता है। जैसे इधर ऊंट रेगिस्तान का जहाज बना हुआ है वैसे ही उधर

ऊंट हैं। ये ऊंट इधर के ऊंटों से भिन्न नाटे तथा गहरा गेहुआ रंग लिये हैं। हमने इनकी सवारी भी की। यहां से आगे सर्वोच्च ऊंची चांग्लापास की बर्फीली चोटी है जहां हम टेम्पो ट्रेवलर से पहुंचे।

लेह से हूंदर होटल में रात गुजारी। यहां झूले के आनन्द के साथ, बाइक राइडर का आनन्द भी लिया। चीनी सीमा पास में होने से हर जगह मिलेट्री के जवानों और गाड़ियों की रेलमपेल देखने को मिलती है। इस यात्रा में डॉ. श्वेता का सान्निध्य हमारे लिए बड़ा उपयोगी रहा। उन्होंने सभी को डाइमोक्स गोली दी जिसके कारण हम सिरदर्द, जी मचलाना तथा चक्कर आने जैसी सामान्य स्थिति के रहते बड़े मजे से सकुशल भ्रमण कर सके।

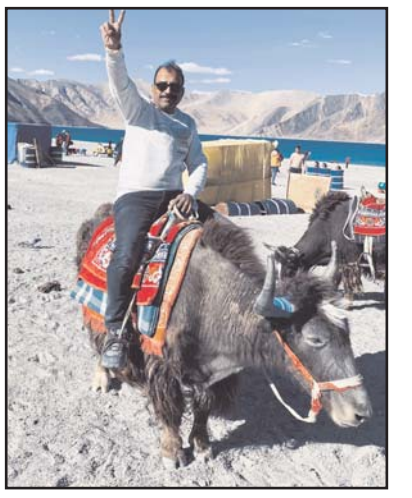

सच तो यह अधिक है कि यात्राकाल में जो कुछ देखा, समझा, अनुभव किया वह शब्दों में नहीं पिरोया जा सकता। ऐसी यात्रा बड़ी ही रोमांचक तथा अनिर्वचनीय आनन्द देती स्वर्णिम सुख देने वाली होती है।

- जैसा कि शब्द रंजन को रंजना भानावत ने बताया

एक दिवसीय देव-दर्शन

भीषण गर्मी से राहत पाने के लिए जब मेरी पुत्री-जामाता डॉ. कहानी-जितन्द्रजी ने संक्षिप्त प्रवासी देव-दर्शन का प्रस्ताव रखा तो आत्मजा डॉ. कविता और मैं; चारों सुबह नाश्ता कर नाथद्वारा की ओर कार-सवारी से निकल पड़े।

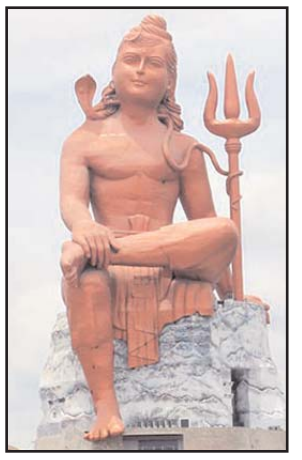

नाथद्वारा से पूर्व घोड़ाघाटी के हनुमानजी के सम्बन्ध में सुन तो बहुत रखा था पर दर्शनों का सौभाग्य अब मिला। पांच मुख वाले खड़े हनुमानजी बड़ी आकर्षक मूर्ति देख पुजारीजी से पूछताछ करने पर बताया कि यह शास्त्रोक्त प्रतिमा है। हनुमानजी ने विविध रूपों में अपना कौशल दिखाकर अपने इष्टदेव राम की प्राण-प्रण से सेवा की जो दूसरा कोई नहीं कर सकता था इसीलिए हर जगह हनुमानजी की प्रतिमा मिलती है। शायद ही कोई गांव हो जहां हनुमानजी की पूजा-प्रतिष्ठा न हो।

यहां से चलकर नाथद्वारा की गणेश टेकरी पहुंचे। यहां टेकरी पर गणेशजी की सुदर्शना का सुख नव्य अनुभूति लिये है। टेकरी के भीतर से हर जगह कीड़ी नगरा देखने को मिलता है। कहानी ने अपने साथ लाई थैली भर कसार से स्थान-स्थान पर दिखाई दिये चींटी-स्थल को तृप्त कर दिया। यहीं से कुछ सीढ़ियां पार कर नाथद्वारा पहुंचने का बड़ा सुहावना नीचे उतरता रास्ता है।

यहीं पास में मिराज द्वारा ऊंची पहाड़ी पर स्थापित विश्व प्रसिद्ध शिवजी की विशाल प्रतिमा देखने पहुंचे। पहाड़ी का परिक्षेत्र अभी निर्माणाधीन है। जब यह पूर्ण हो जायगा तब यह स्थल अनेक खूबियों से बड़ा ही दर्शनीय होगा जो अपने प्रकार का अनूठा एकमात्र होगा।

यहां से हम मुंछाला महावीर पहुंचे। यह स्थान बीच सघन वन बड़ा ही एकान्त किन्तु मनोहारी है। कहते हैं पूर्व में यहां चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी की लघु आकारी मूंछों वाली प्रतिमा थी पर बाद में जब भव्य मन्दिर का निर्माण हुआ तो एक विशाल प्रतिमा स्थापित की गई जो मूंछ विहीन है।

यह स्थाल बन्दरों का बाहुल्य लिये है। मन्दिर के पास ही वृक्षों पर बन्दरों के झुण्ड देखने को मिलते हैं। एक वृक्ष के नीचे गाय खड़ी देखी। ऊपर वृक्ष से एक-के-बाद-एक बन्दर नीचे उतरते रहे। उनमें से कोई गाय की पीठ पर सवार हो गया तो कोई उसकी पूंछ पकड़ उसके प्रत्येक बाल को संवारने में लगा रहा।

यही नहीं, हमने बड़ी देर तक एक के साथ एक और बन्दर को उसके नीचे बैठ स्तन से दूध पीते भी देखा। इस बीच गाय ने तनिक भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह चुपचाप खड़ी रही। ऐसा बन्दर-गाय के बीच का सौहार्द देख हम मनुष्य-मनुष्य के बीच के सम्बन्धों की तुलना भी करते रहे। यहीं भोजनशाला में भी हमने भोजन का आनन्द लिया। जो भी यहां आता है उसके निवास तथा खानपान की भी बेहतरीन व्यवस्था है।

यहां से हम रणकपुर मन्दिर दर्शनार्थ पहुंचे। भयंकर गर्मी होने से सघन वन में बने रणकपुर तीर्थ की ऊपर की सीढ़ियां इतनी थी कि हिम्मत करके ही उन्हें लांघकर कोई पहुंच सकता है। बड़ी उम्र के कई लोग दर्शनों से वंचित रहे। इस मन्दिर में भगवान आदिनाथ की सुन्दर प्रतिमा बिराजमान है। मन्दिर की खासियत यह है कि यह अपने में 1444 खम्भे लिये है। सभी खम्भे एक-दूसरे से जुदा कलात्मक अंकन लिये हैं। इनमें आप कहीं भी खड़े हो जांय, भगवान आदिनाथ के दर्शन कर सकते हैं।

यहां से उदयपुर का रास्ता बीच जंगल के बड़ा ही घुमावदार है। इस रास्ते पर अच्छे सधे हुए वाहन चालक ही यात्रा कर सकते हैं। एक स्थान पर सड़क से लुढ़की तहस-नहस हुई कार नीचे खाई में बुरी हालत में फंसी हुई देखी। पूरे रास्ते बन्दरों का जगह-जगह मिलना भी राहगीरों को कष्ट पहुंचाता है। अकेला देख खाने की तलाश में बन्दर बेहिचक राह चलते पथिक को परेशान करने में जरा भी हिचक नहीं करते। संध्या-रात्रि को यह संक्षिप्त यात्रा पूरी कर सकुशल लौटकर हमने गहरी सांस ली।

-म. भा

बाजार / समाचार

स्वायत्त शासन मंत्री से मिला लेकसिटी प्रेस क्लब का प्रतिनिधि मंडल

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर में लंबे समय से लंबित पत्रकारों के प्लॉट आवंटन को लेकर लेकसिटी प्रेस क्लब का प्रतिनिधि मंडल अध्यक्ष कपिल श्रीमाली के नेतृत्व में स्वायत्त शासनमंत्री शांति धारीवाल से मिलने जयपुर पहुँचा। मेला आयोग के पूर्व अध्यक्ष दिनेश खोड़निया, वीरेंद्र वैष्णव के साथ हुई बैठक में शांति धारीवाल से लंबित प्लॉट प्रकरण को लेकर प्रमुख शासन सचिव से बात कर निस्तारण के निर्देश दिए। प्लॉट आवंटन को लेकर जो भी समस्याएं आ रही हैं, उसके लिए नियमों में और सरलीकरण करने का आश्वासन दिया। प्रतिनिधि मंडल में कुलदीपसिंह गहलोत, अविनाश जगनावत, भगवान प्रजापत शामिल थे।

पिम्स हॉस्पिटल सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, जयपुर द्वारा सोमवार को विश्व जनसंख्या दिवस पर आयोजित समारोह में पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा को सम्मानित किया गया। यह सम्मान पिम्स के प्रबंधक डॉ. एस. के सामर ने ग्रहण किया।

डॉ. सामर ने बताया कि परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट कार्य करने के फलस्वरूप मिशन परिवार विकास श्रेणी के 14 जिलों में उदयपुर के पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर राज्य सरकार द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार के तहत प्रशस्तिपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

स्टील एक्सचेंज इंडिया लिमिटेड 600 करोड़ रुपये जुटाएगी

उदयपुर (ह.सं.)। बीएसई (534748) और एनएसई (एसईआईएल) सूचीबद्ध स्टील एक्सचेंज इंडिया लि. जो लोहा और इस्पात निर्माण के क्षेत्र में एक स्थापित लीडर और एपी के सबसे बड़े निजी एकीकृत इस्पात संयंत्र हैं, ने इक्विटी शेयरों या, परिवर्तनीय डिबेंचर या वारंट, असुरक्षित, सुरक्षित गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर या एक संयोजन, आदि में परिवर्तनीय प्रतिभूतियों को जारी करने के माध्यम से राइट्स इश्यू या एफपीओ (आगे सार्वजनिक पेशकश) या निजी प्लेसमेंट या योग्य संस्थान प्लेसमेंट (क्यूआईपी) के माध्यम से कुल 600 करोड़ रुपये तक) या किसी अन्य माध्यम से धन जुटाने को मंजूरी दी है।

बोर्ड ने कंपनी के इक्विटी शेयरों के विभाजन के प्रस्ताव को 10 रुपये के अंकित मूल्य से 1 रुपये प्रत्येक के अंकित मूल्य के इक्विटी शेयरों में मंजूरी दे दी थी। जिसमें 12 जुलाई 2022 से ट्रेड किया जाएगा। स्टील एक्सचेंज इंडिया लिमिटेड (एसईआईएल) विजाग प्रोफाइल समूह की प्रमुख कंपनी है। वर्ष 1999 में स्थापित, SEIL 'SIMHADRI TMT' ब्रांड के तहत TMT रिबर्स का एक अग्रणी निर्माता है। कंपनी के पास दो तेलुगु राज्यों, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में सबसे बड़ा निजी एकीकृत इस्पात संयंत्र है।

कंपनी का लक्ष्य कस्टम बेस और ग्राहक संगठनों को बढ़ाते हुए एक गुणवत्ता वाले स्टील उत्पाद केंद्र के रूप में विकसित होना है। कंपनी के प्रमुख ग्राहकों में भारतीय रेलवे, शापूरजी पल्लोनजी, कॉनकोर, नोवोटेल, भेल, एनसीसी, आदि शामिल हैं। पिछले साल की शुरुआत में, कंपनी के बोर्ड ने कंपनी के व्यावसायिक कार्यक्षेत्र के संबंध में पुनर्गठन के लिए विभिन्न विकल्पों के मूल्यांकन और कंपनी की जैविक और अकार्बनिक संपत्तियों के बेहतर उपयोग को मंजूरी दी थी।

तेरापंथ महिला मंडल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

उदयपुर (ह. सं.)। तेरापंथ महिला मंडल की साधारण सदन की बैठक 11 जुलाई को बिजोलिया भवन में आयोजित हुई। शासनश्री मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां' ने नवकार मंत्र जप किया। कुसुम पोरवाल, अमिता पोरवाल, तारा परमार एवं डिंपल सिघंटवाड़िया ने मंगलाचरण कर कार्यक्रम की शुरुआत की।

मंत्री दिपिका मारू ने गत वर्ष की कार्यवाही का वाचन किया। अध्यक्ष सीमा पोरवाल ने स्वागत करते हुए पूरे वर्ष में मंडल द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी दी। उपाध्यक्ष सरोज सोनी ने संविधान के मुख्य बिंदुओं का वाचन किया। कन्या मंडल के सभी कार्यक्रमों की जानकारी प्रभारी श्रीमती प्रियल बोहरा ने दी। कोषाध्यक्ष श्रीमती मंजू मेहता ने आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। सरंक्षिका श्रीमती कंचन सोनी ने खुले प्रश्न मंच द्वारा नॉलेज के प्रश्न पूछे जिसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। तत्वज्ञान परीक्षा के तृतीय वर्ष में श्रीमती संप्रति दूगड़ द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर, श्रीमती मनीषा पोरवाल के तत्वज्ञान परीक्षा के 6 वर्ष पूरे करने पर तथा प्रियल बोहरा को तृतीय वर्ष की परीक्षा के लिए प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। आभार सहमंत्री हर्षाली पोरवाल ने ज्ञापित किया।

इस अवसर पर वरिष्ठ श्राविका वर्धापन समारोह में मंडल की 80 या उससे अधिक उम्र की महिलाओं का मोमेंटो व शॉल द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष अर्जुन खोखावत, मंत्री विनोद कच्छारा, युवक परिषद अध्यक्ष अक्षय बड़ाला, मंत्री विक्रम पगारिया, पूर्व अध्यक्ष मनोज लोढ़ा, पूर्व मंत्री महावीर राठौड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष आलोक पगारिया, सूर्यप्रकाश मेहता मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती उषा चव्हाण ने किया। मुनि संबोधकुमार 'मेधांश' के मंगल पाठ से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

स्टार एचएफएल के शुद्ध लाभ में 474 प्रतिशत की वृद्धि

उदयपुर (ह.सं.)। स्टार हाउसिंग फाइनेंस लि. (स्टार एचएफएल) के निदेशक मंडल ने 30 जून, 2022 को समाप्त को वित्तीय वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही के उत्कृष्ट वित्तीय परिणामों की घोषणा की जिसमें वर्ष दर वर्ष आधार पर शुद्ध लाभ में 474 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाई है।

पहली तिमाही के वित्तीय वर्ष 2022-23 की अदायगी रुपए 22.56 करोड़ (अब तक की उच्चतम तिमाही अदायगी) हुई। विकास को सक्षम करने के लिए कार्यों और स्थानों पर कर्मचारियों को शामिल करने के साथ भौतिक कार्यालयों के रूप में परिचालन और भौगोलिक क्षेत्रों में विस्तार किया गया। इससे 100: सीएजीआर के साथ एयूएम बढ़ने और कंपनी के मार्केट कैप में उल्लेखनीय वृद्धि की उम्मीद है।

स्टार एचएफएल के एमडी आशीष जैन ने कहा कि स्टार एचएफएल अब बढ़ने के लिए तैयार है। यह प्रथम तिमाही के वित्तीय वर्ष 2022-23 में हमारे व्यावसायिक प्रदर्शन द्वारा मान्य है और इसे वित्तीय संख्याओं के रूप में बदला जा रहा है। हम सभी स्थानों पर कर्षण (ट्रेक्शन), ऋष और इक्विटी दोनों पर वित्त पोषण पर प्रगति के मामले में पंजीकृत कार्रवाई से खुश हैं। हम स्थान विस्तार, ऑन-बोर्डिंग और डिजिटलीकरण सहित क्षमता निर्माण में निवेश करना जारी रख रहे हैं। हम शेष तिमाहियों में पहली तिमाही की गति को बनाए रखने के लिए तत्पर हैं। हम देखते हैं कि वित्तीय वर्ष 2022-23 के माध्यम से हमारी क्षमता का पूरा उपयोग हो रहा है। हम यहां से अपने व्यापारिक क्षेत्रों में विस्तार करने की आशा करते हैं।

कथूरिया जेके टायर के प्रेसिडेंट बने

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने अनुज कथूरिया को प्रेसिडेंट (इंडिया) के पद पर नियुक्त किया है। कथूरिया दिल्ली में जेके टायर के चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर, डॉ. रघुपति सिंघानिया और मैनेजिंग डायरेक्टर, अंशुमन सिंघानिया को रिपोर्ट करेंगे। कथूरिया के पास 31 वर्षों का गहन अनुभव हैं एवं अशोक लीलैंड एवं टाटा मोटर्स जैसी अग्रणी एवं विख्यात ऑटो कम्पनीज में वरिष्ठ प्रबंधन के पद पर कार्य कर चुके हैं।

डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि मुझे विश्वास है कि कथूरिया कुशल नेतृत्व प्रदान करेंगे और एक नए विकास पथ पर जेके टायर का नेतृत्व करेंगे। भारत में रेडियल प्रोद्योगिकी में अग्रणी जेके टायर एक अग्रणी टायर कम्पनी है, जिसके पास विख्यात ब्राण्ड्स जैसे जेके टायर, विक्रांत, टोर्नल इत्यादि है। इसकी छह महाद्वीपों में 105 से अधिक देशों में उपस्थिति है, जिसमें प्रति वर्ष 32 मिलियन से अधिक टायर की क्षमता के साथ 12 वैश्विक स्तर पर बेंचमार्क टिकाऊ विनिर्माण सुविधाएं (भारत में 9 और मैक्सिको में 3) हैं। नवाचार के प्रति जेके टायर की अटूट प्रतिबद्धता इसके अत्याधुनिक वैश्विक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी केंद्र - मैसूर में 'रघुपति सिंघानिया सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' के माध्यम से परिलक्षित होती है, जिसमें दुनिया की कुछ बेहतरीन प्रौद्योगिकियां हैं। जेके टायर ने टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (टीपीएमएस) के साथ भारत की पहली 'स्मार्ट टायर' तकनीक लॉन्च की, जो दबाव और तापमान सहित टायर के महत्वपूर्ण आंकड़ों की निगरानी करती है।

पेटीएम वॉलट में अनेकों विकल्प

उदयपुर (ह.सं.)। भारत की प्रमुख डिजिटल एवं वित्तीय सेवा कंपनी पेटीएम ने 2014 में भारत के लोगों के लिये देश के पहले डिजिटल वॉलट की पेशकश की थी। यह सेवा अब लाखों यूजर्स की रोजाना की जिन्दगी का अटूट हिस्सा बन चुकी है। पेटीएम की इस्तेमाल में आसान डिजिटल वॉलट सेवा ने ऑफलाइन और ऑनलाइन दुकानों पर ग्राहकों को उनकी खरीदारियों के लिये आसानी से भुगतान करने में समर्थ बनाकर बेजोड़ सुविधा दी है। इसके अलावा दूसरे पेटीएम यूजर्स के वॉलट्स में पैसा भेजा भी जा सकता है। अपने पेटीएम वॉलट में पैसा ऐड करने के लिये यूजर्स कई विकल्पों में से चयन कर सकते हैं, जैसे यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग, क्रेडिट या डेबिट कार्ड आदि। पैसा तुरंत ऐड करने के लिये यूपीआई सबसे सुरक्षित तरीका है और यह प्रक्रिया आमतौर पर कुछ ही सेकंड में पूरी हो जाती है। यूजर्स तेज और आसान ट्रांजैक्शंस के लिये अपने बैंक खाते को पेटीएम ऐप से जोड़कर यूपीआई फीचर का इस्तेमाल कर सकते हैं। बैंक खाता जुड़ने के बाद यूजर यूपीआई फीचर का इस्तेमाल कर अपने पेटीएम वॉलट में सुरक्षित ढंग से पैसा ऐड कर सकता/सकती है।

लोग कई कामों के लिये अपने पेटीएम वॉलट बैलेंस का इस्तेमाल कर सकते हैं, जैसे यूटिलिटी बिल का पेमेंट, मोबाइल रिचार्ज (प्रीपेड और पोस्टपेड), डीटीएच और मेट्रो कार्ड का रिचार्ज, आदि। इसका उपयोग रिटेल दुकानों, पेट्रोल पम्पों और अन्य विभिन्न ऑफलाइन और ऑनलाइन दुकानों पर भुगतान के लिये हो सकता है। यूजर्स पेटीएम पर फ्लाइट, ट्रेन और बस टिकटों की बुकिंग, मूवी टिकट खरीदने, सब्सक्रिप्शंस और दवाइयों के लिये भी पेटीएम वॉलट बैलेंस का इस्तेमाल कर सकते हैं।

एचडीएफसी बैंक और एफवाईएनडीएनए टेककॉप लि. में भागीदारी

उदयपुर (ह.सं.)। एचडीएफसी बैंक लि. ने स्वयं को उत्तरोत्तर डिजीटलीकृत करने के प्रयासों के तहत एफवाईएनडीएनए टेककॉर्प प्रा. लि. के साथ भागीदारी कर कई एंटरप्राइज-क्लास सिस्टम डेवलपमेन्ट और तैनाती के लिए एफवाईएनडीएनए के साथ एक बहु-वर्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। इसका उद्देश्य ग्राहकों की जानकारी को एकीकृत करना, सिस्टम को समेकित करना, इसके भुगतान बुनियादी ढांचे में लचीलापन बनाना, क्लाउड-रेडी, स्केलेबल उत्पाद लेजर प्रदान करना और उन सभी को एकीकृत करना और उन्हें मौजूदा समाधानों और प्लेटफार्मों के साथ संचालित करने में सक्षम बनाना है। यह अपने ग्राहकों को एक नए युग, डिजिटल अनुभव की पेशकश करने के लिए फिनटेक प्लेयर्स के साथ गठजोड़ करने के बैंक के उद्देश्य का एक हिस्सा है। यह साझेदारी एचडीएफसी बैंक को रियल टाइम और सटीकता के साथ ग्राहकों की बदलती आवश्यकताओं का जवाब देने में सक्षम बनाएगी। बैंक अपने ग्राहकों की 24 घंटे 7 दिन जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपने परिचालन में उच्च उपलब्धता और निरंतरता के लक्ष्य के लिए एफवाईएनडीएनए की विशेषज्ञता का उपयोग करेगा।

देवता-मनुष्यों का.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

इसे खोदकर वह सारा धन ले गया और किसी को उसका अता-पता नहीं लगा।

दासियां बड़ी चालाक, धूर्त और मक्कार भी होती थीं। अपने स्वामी की जितनी दिखावटी वफादार होतीं, उतनी ही धोखेबाज भी होतीं। इसीलिए इन दासियों को 'गोली' कहा जाता। कभी-कभी ये खूब मदमस्त होकर मनचाहा करतब करने में भी कोई संकोच नहीं करतीं।

पत्ता महल के पीछे जयमलजी की हवेली है। इस हवेली के सभी कमरे बड़े हैं तथा हर कमरे में जगह-जगह तिधारी बारियां हैं। इनसे अगल-बगल तथा सामने तीनों ओर से चित्तौड़ के आसपास तथा दूर-दूर के दुश्मनों का पता लगाया जाता।

जयमलजी बड़े युद्धवीर थे। इनमें दस हाथियों जितना बल था अर्थात् युद्ध में दस हाथी भी इनका मुकाबला नहीं कर सकते थे। तब चित्तौड़ का सारा युद्ध संचालन इन्हीं के जिम्मे था। चौबीस ही घड़ी खड़े-खड़े ये अपनी हवेली से दुश्मन का पता लगाते और तदनुसार सैनिकों को युद्ध के आदेश-निर्देश देते। हवेली देखने से इस सारी व्यूहरचना का पता चल जाता है।

वे जयमलजी ही थे जो एक रात लाखोटिया बारी की दीवाल की मरम्मत करवा रहे थे कि धोखे से अकबर ने अपनी 'संग्राम' नामक बन्दूक का उन्हें निशाना बना लिया। गोली जयमलजी के पांव में लगी तब वे वहां से थेड़ी ही दूर चट्टान पर सुला दिये गये। उस चट्टान पर जो खून बहा वह आज भी वहां जमा हुआ है। उस विशाल चट्टान से पता लगता है कि जयमलजी कितने मोटे-ताजे एवं महाबली थे। जिस स्थान पर जयमलजी गिरे वहां उनकी यादगार में एक छतरी बनवाई गई। जयमलजी और पत्ता दोनों की लाशें दुश्मनों के हाथ पड़ गईं जो उन्हें आगरा ले गए। वहां ले जाकर फतहपुर सीकरी के बुलन्द दरवाजे के पास गाड़ दी गईं।

यहां से हम एक दूसरे रास्ते से पुन: लौटे। बीच में हमने आदिवासी नर-नारियों के गाते-नाचते-ठुमकते दो बड़े उल्लसित झुंड देखे। ध्यानपूर्वक देखने से पता लगा कि ये सब देव-देवी हैं जो अपनी मौज में खोये हुए हैं। हम इनको टकाटक देखते रहे पर उन्होंने हमारी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इनके साथ कोई वाद्य-वादन नहीं था। बड़े ही शान्तभाव से एक बड़े गोले में हाथों को एक-दूसरे की कमर से सटाये हल्की-हल्की चालों में बड़े ही सौम्य लग रहे थे। आदिवासियों में भी ऐसे नाच ही होते हैं।

इनके थोड़ी दूर एक दूसरा थोड़ा और बड़ा घेरा था। इसमें भी आदिवासी ही थे। हमने मेलार्थियों से पूछा भी कि ये किस गांव के आदिवासी हैं पर किसी ने पुख्ता जानकारी नहीं दी। एक व्यापारी ने कहा कि उसका अधिकांश लेनदेन का काम गांवों से जुड़े लोगों से है पर इनमें से कोई पहचान में नहीं आरहा है।

कुम्भा महल आते-आते मेलार्थियों के बीच हमने एक ऐसा व्यक्ति देखा जो अपने एक पांव पर अधिक जोर देकर चल रहा था। उसका शरीर बड़ा काला था। उसने सफेद पाजामा पहन रखा था। उसके ऊपर सफेद धारीवाला काला कमीज बड़ा साफ-सुथरा लग रहा था। हमने थोड़ी दूर स्थिर रह उसे देखा। वह भी हमें देखता हंसता मुस्कराता धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा। उसके भंवरे जैसे काले घुंघराले बाल थे और दांत सर्वाधिक चमकीले और सुन्दर लग रहे थे। बड़ा अचरज यह रहा कि हम उसे देखते रहे और वह हमें देखता-देखता कैसे कहां अलोप हो गया, पता ही नहीं चला।

आदमियों में जैसे कई तरह के आदमी होते हैं वैसे ही देवता भी तरह-तरह के होते हैं। फर्क है तो दोनों में यही कि आदमी तो आदमी ही रह पाता है जबकि देवता जब चाहे तब अपना देवत्व छोड़ मन चाहा रूप धरने का सामर्थ्य रखते हैं। यह अलग बात है कि उनका भेद कोई जान नहीं पाता। इस मेले ने जहां हमें भी न भूली जाने वाली यादें दी हैं वहां मालपुए का वह स्वाद और फुग्गा तो आज भी हमारी अनमोल धरोहर बना हुआ है।

धींग पुरस्कार कवि डाड़म और दीपा को

उदयपुर (ह. सं.)। साहित्यिक संस्था युगधारा द्वारा प्रदेय कन्हैयालाल धींग पुरस्कार प्रसिद्ध हास्य कवि डाड़मचंद 'डाड़म' तथा नवसृजन हेतु उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार के लिए कवयित्री दीपा पंत 'शीतल' को चुना गया है। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने अपने माता-पिता की स्मृति में ये वार्षिक पुरस्कार प्रारम्भ किये हैं।

खेल अभी बाकी है : डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ

उदयपुर (ह. सं.)। प्रसंग संस्थान की ओर से आयोजित काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता करते डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ ने उदयपुर के साहित्यिक परिवेश की चर्चा करते हुए 'खेल अभी बाकी है' कविता का पाठ किया।

गोष्ठी में शहर की जानीमानी कवयित्रियों में प्रीता भार्गव ने बाजारवाद, मंजु चतुर्वेदी ने 'प्रेम का क्या है, रहे ना रहे', रागिनी शर्मा ने 'हर शख्स यहां हिंदोस्ता कहेगा', चन्द्रकांता बंसल ने 'मैं मिट्टी को देखकर बोली', निर्मला शर्मा ने 'गुसलखाना', नीलम शर्मा ने 'नीलकंठ', किरणबाला जीनगर ने 'दरिया बन तुझ से सदा मिलती रही' तथा किरण खत्री ने 'मैं एक नारी हूं', कविताओं से काव्य-रस को शतरंगी बनाया। संचालन करते विजय मारू ने 'एकांत ढूंढता हूं' कविता का पाठ किया। डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने सांप्रदायिक सौहार्द पर गजल सुनाई।

पेप्सी ब्लैक का ब्रांड अभियान शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के लिए पेप्सी ने पहली बार अपने जीरो-कैलोरी वैरिएंट पेप्सी ब्लैक के लिए ब्रांड अभियान शुरू किया है।

पेप्सिको इंडिया की कैटेगरी लीड, पेप्सी कोला सौम्या राठौर ने कहा कि नया मैक्स टेस्ट विद जीरो शुगर कैंपेन स्वाद और स्वास्थ्य के संतुलन को सेलिब्रेट करता है। इस अभियान को बॉलीवुड अदाकारा जैकलीन फर्नांडीज के साथ पेप्सी के सबसे प्रतिष्ठित सिंडी क्रॉफर्ड विज्ञापन को नए सिरे से बनाया गया है। फिल्म को एक सुनसान विंटेज गैस स्टेशन के सेट पर शूट किया गया है जहां दो युवा लड़के टैंक भरते नजर आते हैं। तभी एक बाइक पर जैकलीन आती है और पेप्सी ब्लैक कैन से बड़ी घूंट लेती है जिस पर लड़के अचंभित हो जाते हैं। ज्यादातर लोग शुगर-फ्री विकल्पों की तलाश में हैं। विशेष रूप से महामारी के बाद, और अपने ग्राहकों के लिए अधिक सकारात्मक विकल्प लाने के इरादे से नए पेप्सी ब्लैक को लॉन्च किया है जो बिना चीनी के अधिकतम स्वाद लाता है।

शुभ विवाह

नव दम्पती कृष्ण कृपादास एवं अर्पिता सुदेव

अहमदाबाद के अन्तर्राष्ट्रीय भावनामृत संगम (इस्कान) में 08 जुलाई 2022 को कृष्ण कृपादास का शुभ विवाह अर्पिता सुदेव के साथ सम्पन्न हुआ। कृष्ण कृपादास (पूर्व नाम कुणाल) के पिता-माता नरेन्द्रसिंह-सीमा भाणावत, उदयपुर तथा अर्पिता सुदेव के पिता-माता सुदेव-सुभाषिनी श्रीनिवासन, अहमदाबाद निवासी हैं। शब्द रंजन की हार्दिक बधाई।

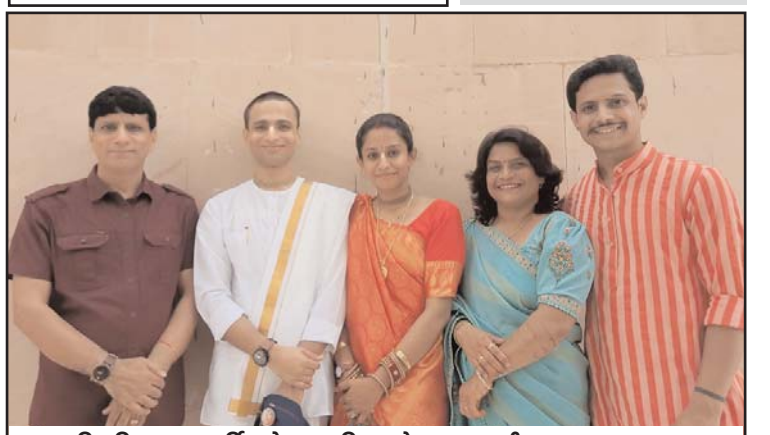

नव विवाहित कृष्ण-अर्पिता के साथ पिता नरेन्द्र, माता सीमा तथा अनुज कुशाग्र

भंडारी और लोढ़ा जैन संस्कारक बने

उदयपुर (ह. सं.)। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित जैन संस्कार विधि की पांच दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात मनोज लोढ़ा एवं पंकज भंडारी का अखिल भारतीय तेरापंथ युवक द्वारा जैन संस्कारक के रूप में चयन किया गया।

स्कूली पुस्तक पुरालेखागार पर तीन दिवसीय प्रदर्शनी

उदयपुर (ह. सं.)। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा उदयपुर में 19 से 21 जुलाई तक स्कूली पुस्तक पुरालेखागार (स्कूल बुक आर्काइव्स) की प्रदर्शनी एवं व्याख्यान का आयोजन किया जाएगा। प्रदर्शनी में 7900 से अधिक पुस्तकों और सम्बन्धित सामग्रियों का एक ओपन-एक्सेसडिजिटल भण्डार होगा और साथ ही संग्रहीत पुस्तकों की सौ से अधिक प्रिंट प्रतियाँ भी रखी जाएँगी। 'स्कूली पुस्तकें और सम्बन्धित दस्तावेज़ : दो सदियों की एक यात्रा' (स्कूल बुक्स एण्ड रिलेटेड डॉक्यूमेण्ट्स : ए जर्नी थ्रटू सेंचुरीज़) नामक इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन विद्या भवन सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में किया जाएगा।

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय ने नवम्बर 2021 में 'स्कूल बुक्स आर्काइव' का अनावरण किया, जो पिछले दो सौ वर्षों में भारत और उपमहाद्वीप में उपयोग में आने वाली स्कूली पुस्तकों और सम्बन्धित दस्तावेज़ों को एकत्र करने और उन्हें व्यवस्थित करने का एक प्रयास है। इस निरन्तर बढ़ते संग्रह में पाठ्य पुस्तकें, संकलन, सन्दर्भ कार्य जैसे शब्दकोश, शब्दावलियाँ, मानचित्रावली या एटलस के साथ ही स्कूल प्रबन्धन, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान पर पुस्तकें एवं स्वास्थ्य संदर्शिकाएँ, और स्कूल व शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम सम्बन्धी अनेक दस्तावेज़ शामिल हैं।

एचडीएफसी बैंक को 19 प्रतिशत का शुद्ध लाभ

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक का वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में शुद्ध लाभ 19 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 9,196 करोड़ रहा। बैंक का इससे पिछले वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में शुद्ध लाभ 7,729.64 करोड़ था एचडीएफसी बैंक ने जारी एक बयान में बताया कि बैंक को आलोच्य तिमाही में 19.8 प्रतिशत वृद्धि के साथ 27181.4 करोड़ का कुल राजस्व प्राप्त हुआ, जो वित्त वर्ष 2021-22 की पहली तिमाही में 22,696.5 करोड़ था। इस में प्रतिभूतियों के कारोबार में लाभ - हानि को नहीं जोड़ा गया है। बैंक का शुद्ध राजस्व (शुद्ध ब्याज आय तथा अन्य आय समेत) 30 जून 2022 समाप्त हुई तिमाही में 25869.6 करोड़ रहा। एचडीएफसी बैंक की इस तिमाही में शुद्ध ब्याज आय (एनआईआई) 14.5 प्रतिशत बढ़कर 19481.4 करोड़ हो गयी, जो 30 जून 2021 को समाप्त हुयी तिमाही में 17009 करोड़ थी।

30 जून, 2022 को समाप्त हुई तिमाही में बैंक का कोर नेट राजस्व (ट्रेडिंग और मार्क टू मार्केट नुकसान को हटाकर) 30 जून, 2021 को समाप्त हुई तिमाही में 22,696.5 करोड़ रु. से 19.8 प्रतिशत बढ़कर 27,181.4 करोड़ रु. हो गया। कुल नेट राजस्व (कुल ब्याज आय जमा अन्य आय) 30 जून, 2022 को समाप्त हुई तिमाही के लिए 25,869.6 करोड़ रु. थे।

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (15)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

सीकर के अनुरंजन :

चिड़ावा में हम दूलियाजी से मिलने उनके घर पर गये मगर दूलियाजी के अपने भानजे बनारसी की शादी में हिसार जाने के कारण मिलना नहीं हो सका। यहाँ से हम सीकर पहुंचे जहाँ शाम विश्रामकर 16 अक्टूबर 1968 को प्रात: यहाँ के एडवोकेट मन्मथकुमार मिश्र से भेंट की। मिश्रजी कला मण्डल के संस्थापक सदस्य एवं राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के मान्य सदस्य हैं। यहां की सांस्कृतिक जनचेतना के भी वे अगुवा हैं। इन्हीं के नेतृत्व में, सन् 1956 में, राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के समक्ष प्रदर्शन देने हेतु यहाँ का गींदड़ दल जयपुर गया था। सीकर में आये दिन इनके यहाँ साहित्य, संगीत एवं कला की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है।

अपनी शोधयात्रा की सूचना मिश्रजी को हम अपने पूर्व पत्र में दे चुके थे अत: यहाँ पहुंचते ही उन्होंने सबसे पहले हमारी कुशलक्षेम पूछी। हमने अपनी कठिनाइयों और उपलब्धियों का लेखा-जोखा करते हुए सीकर क्षेत्र के विविध लोकानुरंजन विषयक जानकारी प्राप्त की। ख्यालों का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि पहले यहाँ ख्यालों का जबर्दस्त जोर था। ख्याल और स्वाँगियों के लिए लोग तरसते थे और उनको देखने के लिए दूर-दूर की जनता उमड़ पड़ती थी।

लक्ष्मणगढ़ में लादूराम तथा कालूराम नामक दो भाइयों का अच्छा दल था। बालकृष्ण नाम से इन लोगों ने विविध ख्याल भी लिखे। जाति के ये ब्राहण थे। इनके साथ श्रीलाल तथा मन्नालाल दक्ष कलाकार थे। सींघल के जमाल का भी श्रेष्ठ दल था। धनीमानी सेठ साहूकार ब्याह शादियों में इन दलों को आमंत्रित कर जन साधारण के लिए निशुल्क प्रदर्शन करवाते थे।

शादी में महीने भर पहले से ही ख्यालिये प्रतिदिन रात-रात भर ख्यालों का समा बांध देते थे। नगर के सांस्कृतिक आमोद-प्रमोद के साथ-साथ नगरनूत भी हुआ करती थी। इसमें सारा नगर ही जीमनेचूंटने के लिए आमंत्रित कर दिया जाता था। नगर में रह रहे प्रत्येक जाति वाले को बुला-बुला कर अनुनय विनयपूर्वक जीमाया जाता था। यहाँ तक कि नगर के मुख्य-प्रमुख रास्ते तथा दरवाजे तक रोक दिये जाते थे। इन रास्तों दरवाजों से जो भी बाल बच्चा वृद्ध युवा स्त्री पुरुष गुजरता उसे रोक कर भोजन कराया जाता था।

गींदड़, चौक चांदणी, धमाल आदि की दृष्टि से भी यह क्षेत्र बड़ा रंगीन रहा है। शिवबक्ष धमाल का माना हुआ नचैया था। इस सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिए हमने यहाँ के रामकृपाल शर्मा से भी भेंट की।

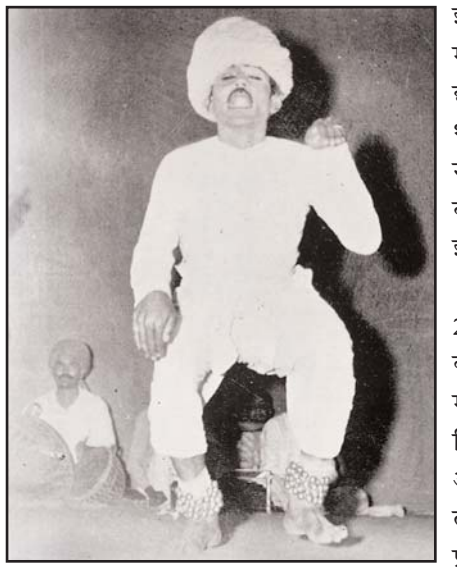

कुचामणी शैली के ख्यालों के जन्मदाता लच्छीराम के सम्बन्ध में यों तो कला मण्डल के पूर्व प्रकाशनों में थोड़ा बहुत लिखा जा चुका है मगर हमारे लिए यह सुखद अवसर था कि हम इनके सम्बन्ध में कुछ और जानकारी प्राप्त करने कुचामण हो आयें। इस दृष्टि से हम सीकर से कुचामण पहुंचे। यहाँ नंदलाल डालूका, जिन्होंने इनकी ख्याल पुस्तकों का प्रकाशन किया, से पता चला कि उनके सम्बन्ध में अधिकृत जानकारी प्राप्त करने के लिए बुड़सू जाना आवश्यक है। अत: हमने प्रात: की बस से बुड़सू के लिए प्रस्थान किया।

बुड़सू के तमासे :

यहाँ सुवालाल गौड़, रमजान तथा स्व. लच्छीरामजी के दत्तक पुत्र गंगारामजी से भेंटकर लच्छीरामजी के सम्बन्ध में बहुत सारी नई जानकारी प्राप्त की। ये मूलत: कुचामण के थे। यहीं इनका जन्म हुआ। बाद में बुड़सू के ठाकुर इन्हें अपने यहाँ ले आये। जैसा कि लच्छीरामजी ने अपने ख्याल में एक जगह लिखा है, 'खास कुचामण वास बुड़सू ख्याल कथ्यो लच्छीराम।' ये अधिक पढ़े लिखे नहीं थे।

केवल अक्षर ज्ञान तक उनका अध्ययन था मगर मेधावी थे। अपने ख्याल लिख-लिख कर ये अपने गुरु पंडित रामस्वरूपजी को बताते थे जो उसे शुद्ध कर अंतिम रूप देते थे। इनका कद ठिंगना, रंग गेहुंआ, शरीर पुष्ट, आवाज बुलन्द तथा व्यक्तित्व प्रभावशाली था। ख्याल में ये बड़ा जनाना बनते थे। धोती कुर्ता तथा पगड़ीधारी लच्छीराम तंत्रमंत्र के भी अच्छे जानकार थे।

ज्योतिष में भी इनकी अच्छी दखल थी। ये लंबी दाढ़ी रखते थे। हाथों में सोने के कड़े तथा गले में डोरा धारण करते थे। 80 वर्ष की उम्र में वैसाख सुदी 8 संवत् 1994 में बुड़सू में इनका देहावसान हुआ। कुचामण में इन्होंने अपना जीवित मौसर किया- 'इन्दोर्‌या मोसर कर्‌यो जीवत लच्छीराम। संवत् इक्यासी मावीद सातम नगर कुचामण धाम।' मोसर में लेण में प्रत्येक को लोठे

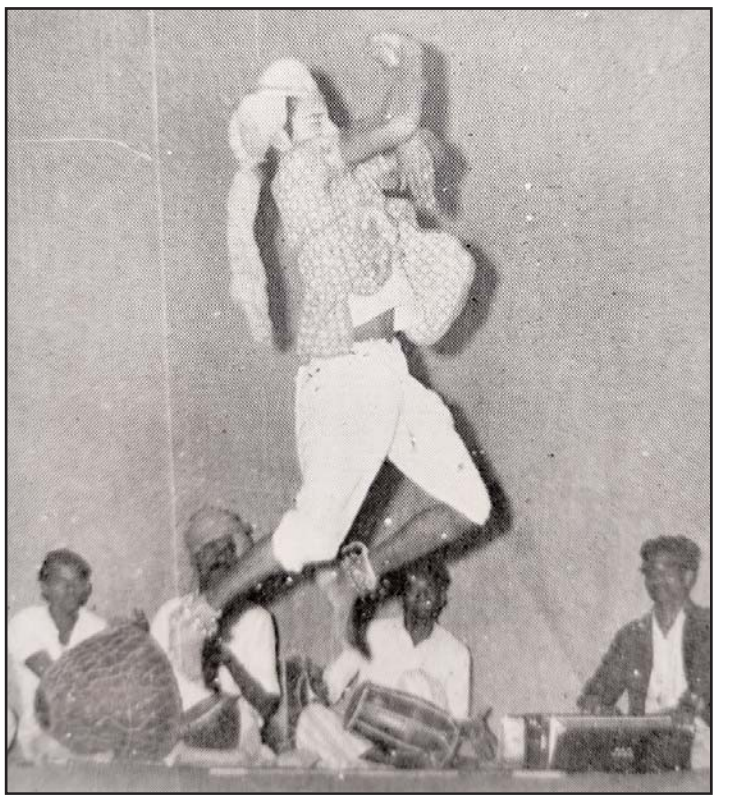

बांटे गये जिन पर, उपर्युक्त दो पक्तियां खुदवाई गईं। हुक्मीचंदजी पुष्करणा उनके उस्ताद थे जो स्वयं अच्छे कवि तथा काव्यरसिक थे।

लच्छीरामजी से कभी इनकी भेंट नहीं हुई-'नाम जाण उस्ताज थरपियो मैं दरसण नहीं पाया।' इनके साथ कुचामण का जुलाहा करीमा, बुड़सू के ताजूसाजी, नब्बूसाजी, मांगूसाजी, बढ़ेसाजी तथा घासीजी, जूसर्‌या का बोदू कुम्हार, भदलिया का जोड़जी ब्राह्मण प्रसिद्ध खिलाड़ी थे। वाद्यों में नगाड़े मुख्य थे। इन्हें बजाने का काम बुड़सू के किसना तथा गोविन्द करते थे। टेर देने वाले भी इनके दल में अलग होते थे। मांगीलाल फकीर राजा बनता था। छह तख्तों का मंच बनाया जाता था। पड़दे नहीं लगाये जाते थे। रात-रात भर खेल चलता था। बड़े-बड़े ठिकानों तथा रजवाड़ों में इनके दल की पहुंच थी।

लच्छीराम के लिखे लगभग 25 ख्याल प्रकाशित हैं। इन ख्यालों के अतिरिक्त उन्होंने हँसी मजाकपूरक होली ख्याल भी लिखे। फागण (फाल्गुन) के आसपास होली के दिनों में मसखरे लोगों में इन ख्यालों ने बड़ी प्रसिद्धि पाई। इन ख्यालों का कथानक अश्लील हंसी-फूहड़मूलक होता है। फागण में गाने के कारण इन्हें फागणिया ख्याल कहते हैं। अन्य ख्यालों की भांति इन ख्यालों के लिए न वैसा मंच होता है न प्रदर्शन ही। ये मुख्यत: गायन एवं वाचन प्रधान ही होते हैं। इसलिए इनके वाचक गायक विशिष्ट कलाकार ही नहीं होते, गांव के वे सभी लोग होते हैं जो होली के रंग में रंग चुके होते हैं।

कहते हैं, ख्यालों में सबसे पहले हलकारे का प्रारम्भ लच्छीरामजी ने किया। पहले ख्यालों में भंगी आता जो मंच की सफाई करता, फिर भिश्ती आकर छिड़काव करता और उसके पश्चात विदूषक के रूप में आनदी प्रवेश करता था। यह पगड़ी ऊपर तुर्रा अंगरखी तथा नीचे घाघरा पहने हुए होता था।

मीठड़ी का लच्छीराम खोजी (बावरी) इनका चेला था। इसने भी कई ख्याल पुस्तकें लिखीं। इनमें से रुक्मणी मंगल, सत्यनारायण, पन्ना वीरमदे, मोरध्वज, पाबूसिंघ राठौड़, हरिश्चंद्र आदि उल्लेखनीय हैं। सांभर के घनाघन ने भी अजमेरा चाल के ख्याल लिखे। घनाघन लच्छीरामजी के समकालीन थे। कई बार लच्छीरामजी को बुलाकर इन्होंने अपने यहाँ ख्यालों के प्रदर्शन करवाये।

लच्छीराम के पिता का नाम आशाराम था। इनके जीवणराम नामक एक छोटा भाई था। इन्होंने कुचामण के पास पांचोता में शादी की। संवत् 1998 मगसर सुदी 11 को इनकी मृत्यु हुई। इनके एक लड़का भी हुआ था मगर अधिक नहीं जी पाया। स्वभाव के ये बड़े गर्म थे।

लच्छीरामजी दोनों हाथों से लिखते थे। इनकी लिखी हस्तलिखित ख्याल पुस्तकें गंगारामजी के पास सरक्षित हैं। ये चित्रकार भी थे। चित्रकला इन्होंने दांतरी (किशनगढ़) के अपने मामा चतुर्भुज से सीखी थी।

इनका सबसे पहला खेल मीरां छपा। गंगारामजी ने इनकी मृत्यु के बाद इनका लिखा अधूरा खेल बुलिया भटियारिन व सायजादा पूरा कर प्रकाशित करवाया। कुचामण के गोविन्दराम डालूका के पास लच्छीराम का लिखा हरिश्चंद्र नामक खेल अप्रकाशित पड़ा हुआ है। इनकी लिखी हुई रागरसना, सेठ-सेठानी, आभलदार तथा रुक्मिणी मंगल नामक पुस्तकों की पांडुलिपियां भी गंगारामजी के पास सुरक्षित हैं। डीडवाना में लच्छीराम के समकालीन नत्थू दर्जी हुआ जो अच्छा खिलाड़ी तथा ख्याल लेखक था। इसकी लिखी गीत रामायण प्रकाशित है।

बोरावड़ में भूरजी जड़िया की कुचामणी ख्यालों की पार्टी है। भूरजी स्वयं ख्याल लेखक भी हैं। कुचामण में बहुगुणा भाट तथा पर्बतसर में मांगीलाल बावरी का भी अच्छा दल है। बरवाला का गणपतलाल ब्राह्मण भी अच्छा खिलाड़ी एवं ख्याल लेखक है। जांवल कठौती (मेड़ता) के हरसुखजी का राजा डींग और उर्वशी ख्याल प्रकाशित है। नांदला के पांचू तेली ने भी सुल्ताना डाकू तथा डूंगजी जवारजी का ख्याल लिखा जो अप्रकाशित है।

गंगारामजी का लड़का मोहनलाल भी अच्छा ख्याल लेखक है। इसका लिखा वनलीला, जगमग ज्योति, रंडवों की महफिल आदि प्रकाशित है। इसके अतिरिक्त इसके लिखे भजन मंगल, संत तुलसीदास का मारवाड़ी खेल तथा ख्वाजापीर अजमेर वाले का मारवाड़ी खेल अप्रकाशित हैं।

लच्छीरामजी के साथ खेलने वालों में यहाँ के घासीजी दर्जी भी बड़े नामी कलाकार हैं। मोहनजी को लेकर बुड़सू से तीन मील दूर उनके खेत पर हम उनसे भेंट करने गये। उन्होंने लच्छीरामजी के सम्बन्ध में कुछ और जानकारी देते हुए बताया कि उन्हें परज, भैरवी, झेला, चंद्रायणी, तिलाणी, आसावरी, नागलहरी, ठुमरी, सौरठ, मल्हार, पणिहारी, टोडी, कहरवा आदि रागें बड़ी प्रिय थीं अत: इन्हीं रागों में इन्होंने अपने ख्यालों की रचना की। घासीजी उनके साथ मर्दाना बनते थे। उन्होंने पैसठ वर्ष तक अपना दल चलाया।

14 वर्ष तक स्वयं घासीजी उनके साथ खेलते रहे। घासीजी के अतिरिक्त करीम जुलाहा तथा दादू पंथी साधू दो और नामी कलाकार थे। करीम तो मूंडवा खेल ही में चल बसा। यह जनाना बनता था। इसका कण्ठ बड़ा सुरीला था। 14 वर्ष की उम्र से लच्छीराम ने खेल खेलना प्रारंभ किया। जब किताबें नहीं थी तब वे हाथ से लिख-लिख कर अपने हिस्से की पंक्तियां हमें देते थे। इनमें किसी प्रकार का कोई व्यसन नहीं था।

यहीं हमें विप्र झाल, सोनी हीरानंद, गीगराज सारस्वत, गोविन्दराम गौड़, विप्र यज्ञदत्त, उदा जोशी, झूंथा जोशी, जसुलाल, द्वारिकाप्रसाद, गोपाल, बलदेव, डालू अगरवाला, सुखलाल, नानूलाल, कल्याणराय जोशी, लछिमन, न्यादरसिंह खाती, रतना आदि-आदि ख्याल लेखकों विषयक जानकारी भी प्राप्त हुई।

बुड़सू से हम लोग मकराना होते हुए 16 अक्टूबर को सीधे रेल द्वारा जोधपुर आये। यहाँ संगीत नाटक अकादमी की सचिव सुश्री सुधा राजहंस तथा लोकसाहित्य के मान्य सम्पादक डॉ. रामप्रसाद दाधीच से भेंट हुई और उस क्षेत्र की कला संस्कृति विषयक चर्चा की। **- क्रमश:**

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।